हो या बुरा), किया जावेगा, वह उस कंकर या मिट्टी की डली की तरह आकाश में फेंक दिया गया है और चूंकि आकाश हर जगह मौजूद और सारी दुनियां पर फैला हुआ (सर्व-व्यापी) है, इसलिये आपके उस ख़याल का असर तमाम दु-नियां पर उसी वक़्त फैल जाता है.

और विना तार के ख़बर पहुंचाने (Telepathy) का काम इसकी वेशुवह और उम्दा नज़ीर (उदाहरण) मौजूद है, इसलिये नेक ख़याल ही वहुत बड़ा कल्याणदाता गुप्त-दान और सबसे बढ़कर परोपकार है.

क्या आप नहीं जानते हैं कि इसी के सहारे हमारे देश के वड़े २ महात्मा और योगी घने और बयाबान जंगलों में दरिन्दों वग़ैरह से महफ़ूज़ (सुरक्षित) रहते आये हैं और वर्त्तमान काल में इस विद्या और ताकत (शक्ति) से ख़ास-कर अमेरिका में वहुत कुछ काम लिया जाता है.

नाज़िरीन ! मुझे इस मुबारिक इत्तिफ़ाक़ की बात पर भी ख़ुशी है कि, पहिले तो यह काम बएतबार दिन के आज तारीख़ १२ दिसम्बर सन् १९११ इसवी के उस दिन ख़तम हुआ है कि, जिस दिन दिल्ली में हुज़ूर मालिक मुअज्ज़म (श्री-मान् सम्राट् जार्ज पंचम) का शहन्शाही दर्बार है और वक़्त के ऐतवार से उसके लिखने का काम ठीक उस वक़्त पूरा हुआ है कि, जब दर्बार की रसम या दर्बार के ऐलान की सलामी की तोपें सर होने लगीं.

आखीर में मैं लाला बालमुकुन्दजी और मोडीलालजी पं-चोली (कायस्थ) साबिक़ वकील को धन्यवाद देता हूं कि, जिनसे मुझे इस काम में अच्छी मदद मिली है.

उदयपुर (मेवाड).
ता० १२-१२-११ ई०
पौष कृष्णा ७, सं० १९६८ वि०

आप का हितेच्छु—
लाला अमृतलाल,
(माथुर कायस्थ).

॥ श्रीएकलिंगो जयति ॥

जैसा ख़याल वैसाही नतीजा

(याने विचारपरिणाम)

इन्सान को सच्चे और सीधे मार्ग पर लाने
वाला और सफलता का सब से
अच्छा और सुगम रास्ता.

बल्कि सफलता की चोटी पर पहुंचाने का
सब से उत्तम विमान (हवाई जहाज़).

गुप्तभेद, सुख और शान्ति, उन्नति और तन्दुरुस्ती, खुशहाली (आसूदगी) और बेफ़िक्री, दया और इन्साफ, अक़्ल (बुद्धि) और ज्ञान का परमसुख, आनन्द, सफलता और मनोरथ की सिद्धि, ग़रज कि हर एक तरह की खुशी के भंडार की कुंजी (ताली), जिसके हाथ लगने से हर तरह का रंज और चिन्ता, दुःख और संकट व बदनसीबी दूर होजाती है.

लाला अमृतलाल माथुर सुप्रिन्टेन्डेन्ट पुलिस
रियासत उदयपुर मेवाड़ ने—

अपने देशवासियों के लिये चाहे वे किसी मज़हब व कौम के हों, हकीम दुर्गाप्रसाद साहिब देहलवी एडीटर रिसाले रामकृष्ण लाहौर के जेम्स एलन साहिब की अँग्रेज़ी किताब

में किये हुए उर्दू तर्जुमे से आम लोगों के समझने काबिल देशी ज़बान में किया, जो शख्श इस किताब को चित्त लगाकर पढ़ेगा और इसके मुताबिक चलेगा, वह निस्सन्देह सफ़लता की चोटी पर पहुंचेगा.

इस किताब के पढ़ने के लिये हकीम दुर्गाप्रसाद साहिब की सिफ़ारिश.

प्यारे दोस्तो! अंग्रेज़ी ज़बान में यह किताब जिसका लफ्ज़ी तर्जुमा आपकी ख़िदमत में पेश करता हूं. एक लाख की तादाद में पांच बेर छप चुकी है. इसी सबब से पश्चिमीय (यूरोप) देशों के लोग ज्यादा अक्लमन्द और ख़ुशहाल हैं, क्योंकि वे ऐसी किताबोंसे इल्म सीखकर उससे फायदा उठाते हैं, इसलिये मुझे उम्मेद है कि, आप भी सिर्फ़ मनबहलाव के लिये ही इस किताब को नहीं पढ़ेंगे, बल्कि उसके मुवाफ़िक़ वर्ताव करने के लिये. मैं दावा करके कहता हूं कि जो शख्स लगातार एक वर्ष तक इसको सोच समझ कर पढ़ेगा और इसकी हिदायतों के मुवाफ़िक़ चलना ठानकर नेक ख्यालात ही सोचता रहेगा और अपना विचार ऊंचे दरजे का कायम करेगा वह एक वर्ष पूरा होने से पहिले ही अपनी आंख से देखलेगा कि, वह अपने इरादों में कैसा फलीभूत और देवताओं के से गुणवाला आदमी होगया है. ऐसा आदमी जो हररोज़ इसकी बातों को खूब ध्यान देकर सोच कर वर्ताव करने लगेगा वह निस्सन्देह पूरे तौर से ख्याल के

क़ायदों को जान जायेगा. वह समझ जायेगा कि ख़याल (विचार) क्या चीज़ है और उसको किस तरह से क़ायदे के मुवाफ़िक़ (नियमपूर्वक) रखना चाहिये. वह अपने लिये रेहमत (ईश्वर की कृपा) और दूसरों के लिये देवताओं की सी बरकत साबित होगा. मैंने यह तर्जुमा किसी ख़ास फ़िर्के या क़ौम के लिये नहीं किया है, बल्कि इसको हरएक आर्य, सनातनधर्मी, ईसाई, मुसल्मान, यहूदी, पारसी, जैनी, बौद्ध, ग़रज़ कि मनुष्यमात्र के फायदे के लिये अर्पण किया है, इसलिये हरशख्स का फ़र्ज़ (धर्म) है कि वह इसको खुद पढ़े और अपने बच्चों, दोस्तों, भाई, बन्धुओं और कुनबे वालों को पढ़ावे या पढ़कर सुनावे और इसके मतलबों को उनके ज़िहन में अच्छे तौर पर जमादेवे और ऐसा करने से एक दिन सारी पृथ्वी पर शान्ति का राज्य होजायेगा और हरतरह की बर्क़तें प्राप्त होंगी और सच्चे मालिक की दया (कृपा) तुम्हारे शामिल-हाल होगी.

जैसा ख़याल वैसा नतीजा.

(मेरी प्रार्थना)

सुरत या खयाल ही एक बहुत बड़ी ज़बर्दस्त ताक़त (शक्ति) है, जिसका यह गिनती में नहीं आसकने क़ाबिल कारख़ाना हमको अपने चौतरफ़ दिखाई देता है. भारत के सन्तों, महापुरुषों, ऋषियों, मुनियों, ने तो अपनी जिन्दगी ही सुरत साधना या इल्म खयाल के लिये अर्पण कर रक्खी

है और यहां से बढ़कर इल्म ख़याल के जाननेवाले दूसरे देशों में न तो कभी पहिले हुए न अब हैं. लेकिन यह लाख लाख धन्यवाद का मक़ाम है कि, अब पश्चिमी (यूरोपवाले) विद्वान् लोग भी इस पाकीज़ा इल्म की तरफ़ ध्यान देने लगे हैं और पहिले जिन बातों की ठठोल उड़ाया करते थे, अब उनकी सचावटों के आगे हाथजोड़ कर सिर झुकाते हैं और अपने आपे की सुध भूलकर (मग्न होकर) इल्म ख़याल की सचाई के राग अलापते हैं. यहां पर हम एक बड़े ही मशहूर लिखनेवाले मिस्टर जेम्स एलन के ख़यालात याने विचारांश का तर्जुमा करके अपने पाठकों की सेवामें अर्पण करते हैं. इसलिये नहीं कि भारतवासियों के लिये कोई नई बात है, बल्कि सिर्फ़ इस ग़रज से कि, आजकल पश्चिमी सभ्यता के असर में आकर लोगों के दिलों में ऐसा वहम समा गया है कि वे अपने घरकी सच्ची बातों को भी उस वक़्त तक सच मानने से इन्कार करते हैं, जबतक कि उस पर पश्चिमी तहक़ीक़ात की मुहर छाप न लग जावे, नहीं तो हिन्दुस्तान में इल्म ख़याल की ख़ूबियां पश्चिमी देशों के मुक़ाबले में बहुत ही अच्छी तरह से और ज्यादा तफ़सील के साथ बयान की गई हैं. ख़ैर अब महाशय जेम्स एलन के सराहने क़ाबिल मज़मून को पढ़िये और इस अचरज दिलानेवाली ज़िन्दगी के साथ अनुरक्त * होने की कोशिश कीजिये, जिसकी वाक़फ़ियत से बेड़ा पार होजाता है.

(नियाज़मन्द दुर्गाप्रसाद)

---

* मानूस ।

ख़याल और चालचलन (१)

यह मशहूर कहावत है कि । "जैसा इन्सान का ख़याल होता है वैसा ही इन्सान आप होता है" यह कहावत सिर्फ़ इन्सान ही की पूरी ज़िन्दगी पर सच्ची सावित नहीं होती, वल्कि ज़िन्दगी के हरएक हिस्से, हरएक हालत, हरएक सूरत और कैफ़ियत में इसी का अमल दख़ल है और सब कुछ इसी की लम्बाई चौड़ाई के घेरे में आजाता है. आदमी जैसा सोचता है वैसा ही करता है या यों समझिये कि मनुष्य का स्वभाव और गुण उसके ख़याल याने सोच विचार का निचोड़ है, जैसे कोई अंकुर जो जमीन से फूटकर बाहर निकलता है बिना बीज के कभी नहीं होसकता. इसी तरह से इन्सान का हरएक काम उसके गुप्त विचारों के बीज से पैदा होता है और विना ख़याल के कभी भी ज़ाहिर नहीं होसकता. यह बात आदमी के हरएक काम पर, चाहे वह इख़्तियारी हो या बिना सोचे समझे हो, इसी तरह से एकसां तौर पर सच्चा सावित होता है, जिस तरह कि सोच समझ कर काम करने की हालत में.

काम (कर्म) खयाल का फूल है, खुशी और नाखुशी इसके फल हैं, इसी तरह से मीठे या कड़ुवे फल जो कुछ भी इन्सान पाता है, उनका बोनेवाला वह आप ही होता है.

हमारे मनके संकल्प ने ही हमें बनाया है, हमारा जिस्म याने शरीर ख़याल ही की बनाई हुई मूर्त्ति है, इसलिये अगर कोई शख़्स बुरे ख़यालात अपने मन में उठाता है तो तकलीफ़ें उसके पीछे उसी तरह से चिपट जाती हैं, जैसे गाड़ी मे जुते -

हुए बैल के पीछे गाड़ी का पहिया, परन्तु जिसके दिल में पवित्र ख़यालात लहरें मारते रहते हैं, निस्सन्देह ख़ुशी और आसूदगी भी इन्सान की परछायां की तरह हरहालत में उसका पीछा नहीं छोड़ती, जैसा कि कहा हैः—

दोहा ॥

चित में जाके रहत है, जैसी सुरत विशेष ।
वैसो ही वो होत है, या में मीन न मेख ॥ १ ॥
जो कछु है हम आज दिन, यों तू समझ सुजान ।
पुरवकाल की सुरत को, फल यह नहचे जान ॥ २ ॥
दुरविचार जो हैं सदा, होहि अटल दुःख अन्त ।
ज्यों दुःख पाछे बैल के, पहियो रथ चालन्त ॥ ३ ॥
सदविचार मन में बसें, रहे शान्ति सुख संग ।
जिम परछायां मनुष की, रहत साथ नित अंग ॥ ४ ॥

(बालमुकुन्द).

इन्सान का पैदा होना और बढ़ना याने उसकी उत्पत्ति और वृद्धि कुदरत के क़ायदों के अनुसार होती है, किसी खास हुनर और दानाई के सबब से नहीं होती और ख़याल की अदृष्ट (दिखाई नहीं देनेवाली) दुनियां में भी कारण और कार्य का बाक़ायदा क़ानून इसी तरह अपना अमल करता है, जैसा कि दिखाई देनेवाली उपादान कारण से सम्बन्ध रखने वाली सृष्टि में किसी शख्स का उत्तम और देवताओं का सा चलन किसी की मिहरबानी या सजोग की चीज नहीं है, बल्कि लगातार उत्तम विचारों के सोचते रहने का कुदरती न-

तीजा है. उन देवताओं के से विचारांश का फल है कि, जो बहुत अरसे तक सोचे गये थे. साथ ही इसके किसी आदमी का पाजीपन और वहशियाना चालचलन इस बात का नतीजा है कि, वह मुतवातिर (निरन्तर) मैले और नीच खयालात में फंसा रहा है. अपने आपको बनानेवाला और न बनानेवाला इन्सान आप ही है. खयाल के सिलहख़ाने में वह ऐसे हथियार बनाता है, जिनसे वह अपने आप को क़त्ल कर डालता है. और वह ऐसे शस्त्र भी ढालता है जिनके सबब से वह स्वर्ग की सी ख़ुशी, ताक़त और अमन चैन पाता है. खयाल की सच्ची समझ बूझ और उसके ठीक वर्ताव से इन्सान दुनियां के कमाल की हदपर पहुच जाता है लेकिन खयालात ही के ग़लत तरीक़े पर काम में लाने से इन्सान सब से नीचली दरिन्दों (शेर चीते वग़ैरा हिंसक पशुओं) की पंगत (पंक्ति) में गिर पड़ता है. चालचलन के सब दरजे इन्हीं दो हद्दों (सीमा) के बीच में आजाते हैं और इन्सान इनका बनानेवाला और मालिक आपही है.

जितने सुडौल मसले (बातें) रूह याने जीवात्मा के विषय में घड़े गये है और इस ज़माने में उनको ज़ाहिर किया गया है, उन सब में इससे ज़्यादा अच्छी, ज़्यादा फलदायक, ज़्यादा तसल्ली देनेवाली और ईश्वरी वादे से भरपूर और भरोसे की कोई भी बात नहीं है कि—

"इन्सान खयाल का मालिक है, चालचलन का सांचे में ढालनेवाला है और अपनी हालत, अपनी हद

बांधनेवाला और अपनी क़िस्मत का बनानेवाला और काट * छांट करनेवाला है".

जोकि बल का, बुद्धि का, प्रेम का और अपने ख़्यालात का मालिक इन्सान ख़ुद है, इसलिये उसके पास हरएक अवसर की कुंजी मौजूद है और ख़ुद उसके भीतर एक ऐसा मसाला या ताक़त मौजूद है कि, जिससे वह अनेक रूप धारण कर सकता है और नये सिरसे किसी बात को पैदा कर सकता है, जिसके द्वारा वह अपने को जैसा चाहता है, बना सकता है.

इन्सान हर हाल में मालिक है चाहे वह सब से ज़्यादा कमज़ोर और सब से ज़्यादा दीन और दरिद्रता की हालत में ही क्यों न हो, लेकिन ऐसी हालत में वह अज्ञान और मूर्ख मालिक है जो अपने घराने † में बद-इन्तिज़ामी से हुकूमत करता है, परन्तु इसमें शक नहीं कि, जिस वक़्त वह अपनी हालत पर सोच विचार करने लगता है और मुस्तैदी से उस क़ानून को ढूंढ़ता है, जिसपर कि उसकी ज़िन्दगी क़ायम है, वह एक बुद्धिमान् मालिक हो जाता है, कि जो अपनी दानाई से अपनी भीतरी ताक़तों को अगुवा बनाकर चलता है और अपने विचारों को जिनसे अच्छे नतीजे पैदा हों, घड़ता है, ऐसा शख़्स वाक़िफ़कार मालिक है. और सिर्फ़ अकेले इसी एक तरीक़े से इन्सान को अपने अन्तर में अपने ख़याल के क़ायदों का भान हो जाता है

---

* तराश व ख़राश.

† शरीर (जिस्म) से भी मुराद है.

और इस तरह का ज्ञान इन्सान को अपने भितरी निश्चय और अपने आप के तजर्बे (अनुभव) से प्राप्त होता है. सिर्फ़ ज्यादा खोज करने और खानों को खोदने से ही इन्सान को सोना और हीरा मिलता है. इसी तौर से इन्सान अपनी ज़िन्दगी से तअल्लुक़ रखनेवाली हरएक सचावट का पता लगासकता है, अगर वह अपने जीवात्मा को कुछ गहरा खोजे, और उस वक्त सच्चा विश्वास होकर उसको यह निश्चय होजायेगा कि, वह अपने चालचलन का बनानेवाला आप ही है. अगर इन्सान अपनी निरख परख आपही करता रहे और अपने विचारों को हालत और मौके के मुवाफिक सुधारता रहे और इस बात को ध्यान से देखता रहे कि, ऐसा करने से उसके खुद के हालात पर और दूसरों पर उसका क्या असर पड़ता है, साथ ही इसके कारण और कार्य के सम्बन्धों पर साबितक़दमी (दृढ़ता) और तलाश से गहरी नज़र डालकर अपने आपको जाने तो इसी का नाम जानकारी (वाक़फ़ियत), दानाई और ताक़त है और सिर्फ़ इसी तरीके से, न कि किसी दूसरी तरह पर, इन्सान को इस कहावत की सच्चाई साबित होजायेगी कि—

" चित लगाय खोजे जो जाही ।
निस्सन्देह * मिले सो ताही " ॥
(बालमुकुन्द).

और जो शख्स़ कुंडा (सांकल) खटखटाता है उसके

---

* जिसे इन्सान दिल से ढूंढता है पाहि जाता है.

लिये ज़ुरूर दर्वाज़ा खोला जाता है, लेकिन यह बात सिर्फ़ साबितक़दमी (दृढ़ता), अभ्यास और लगातार अति याचना (बहुत ही कोशिश) से ही इन्सान को हासिल होसकती है कि, वह ज्ञान के मन्दिर के दर्वाज़े में दाख़िल होसके.

हालात या कैफ़ियतों याने अवस्था वा स्थिति पर ख़्याल का असर (२).

इन्सान का मन एक बाग़ के मुवाफ़िक़ है, जिसमें चाहे वह फल फूल उपजावे, चाहे उसको वर्बाद होने के लिये वैसा ही छोड़ दे, लेकिन यह बात ज़ुरूरी है कि, अगर बाग़ बोया जायेगा और वेपर्वाई या असावधानी नहीं की जायेगी तो इस में शक नहीं कि ज़ुरूर उसमें फल फूल उपजेंगे, परन्तु साथ ही इसके यह भी है कि, अगर उसमें फ़ायदा देनेवाले अच्छे बीज नहीं बोये गये तो निकम्मे बीज बहुतायत से उसमें आपड़ेंगे और लगातार अपनी ही क़िस्म के झाड़ झंकाड़ पैदा करते रहेंगे. जिस तरह से माली अपनी क्यारी लगाता है और घास फूस कूड़े कर्कट से उसे साफ़ सुथरी रखता है और उसमें इस क़िस्म के फल और फूल उगाता है, जिनकी उसको चाहत होती है इसी तरह से आदमी को अपने मन के बाग़ की चौकसाई करनी चाहिये और तमाम मूर्खता के और निकम्मे और मैले ख़्यालात को उखेड़ कर दूर फेंक देना चाहिये और कमाल (सिद्धता) प्राप्त करने की ग़रज़ से सच्चे फ़ायदा पहुंचानेवाले (उपयोगी) और साफ़ ख़्यालात के फलों और फूलों का बीज बोना चाहिये. ऐसा करनेसे जल्दी

ही या कुछ समय पीछे इन्सान को यह बात निश्चय होजायेगी कि, वह अपने जीवात्मा के बग़ीचे का सरनायक माली है और अपनी जिन्दगी का इन्तिज़ाम (प्रबन्ध) करनेवाला है. इसी तरह वह अपने अन्तर में ख़याल के क़ानून को जान लेगा और हरदम बढ़नेवाली सच्चाई के साथ उसको यह बात मालूम होजयेगी कि, किस तरह से खयाल की ताक़तें और दमाग़ी (मस्तिष्क) तत्व उसके चालचलन, दशा और क़िस्मत (भाग्य) के घड़ने में अपना काम करते हैं.

ख़याल और स्वभाव (कैरेक्टर) एक ही चीज़ है और चूंकि स्वभाव अपने आपको अपने इर्द गिर्द के सामानों और चालचलन के ज़रिएसे ही प्रकट और प्रकाशित करता है, इसलिये हरएक आदमी की ज़िन्दगी के बाहिरी हालात हमेशा उसकी भीतरी हालात की एकता से मिले हुए पाये जायेंगे, इसका यह मतलब नहीं है कि, इन्सान के किसी मुक़र्रेरा वक़्त (नियत समय) के हालात उसके पूरे चालचलन की निशानी है, बल्कि इसका यह अर्थ है कि हालात का मौजूदा सिल्सिला उसके भीतर किसी ख़याली ताक़त के जौहर से ऐसा गाढ़ा मिला हुआ है कि ख़ास उस वक़्त के लिये उनका प्रकट होना ज़ुरूरी है.

हरएक आदमी चाहे जहां कहीं है (याने जिस हालत या दशा में भी है), अपनी ज़िन्दगी के क़ानून के मुआफ़िक़ ही है, वे ख़यालात जिनको उसने कैरेक्टर (चालचलन) की शकल में ढाल लिया है, उसे वहां लेगये हैं और उसकी

ज़िन्दगी के सम्बन्ध में संजोग * का तत्त्व नाम मात्र को भी नहीं है, बल्कि सारा नतीजा एक क़ानून का है, जो कभी भूल चूक नहीं करसकता. यह क़ानून उन लोगों पर जो अपने आपको अपने इर्द गिर्द के हालात की एकता से बाहिर देखते हैं और उन लोगों पर भी जिनको उन पर सबर है, एकसा घटता है †.

चूंकि इन्सान एक तरक्क़ी (उन्नति) करनेवाली और गुप्त भेदों को प्रकट करनेवाली सृष्टि (दुनियां) है, इसलिये वह जिस हालत में भी है इस गरज़ से है कि वह वृद्धि ‡ पाता रहै और जब वह अपनी ज़िन्दगी की ख़ास हालत में जीवात्मा का सबक़ (पाठ) सीख चुकता है तो पहिली हालत उठजाती है और नये हालात (दशाओं) के लिये जगह ख़ाली करदेती है.

इन्सान दशाओं (हालात) की मार उसी वक़्त तक खाता है जबतक कि वह बाहिरी दशाओं का पैदा किया हुआ अपने को मानता है. लेकिन जब वह इस बात का अनुभव करता है कि वह आप ही एक पैदा करने वाली ताक़त है और वह अपनी जिन्दगी की गुप्तभूमि (ज़मीन) और बीजों पर जिनके भीतर से उसकी जिन्दगी की बाहिरी दशाएं पैदा होती हैं हुकूमत कर सकता है उस वक़्त वह अपने आपका सच्चा मालिक बन जाता है.

* इत्तिफ़ाक़ का उन्सर.

† साबित आता है.

‡ तरक़्क़ी करता रहे

जिस शख़्स ने ठीक समय तक अपने आप पर हुकूमत करने और चित्त की शुद्धि का अभ्यास किया होगा, वह अवश्य जानता होगा कि, बाहिरी दशाएं ख़याल से पैदा हुआ करती हैं, क्योंकि उसने यह बात देखली होगी कि, जितनी उसने अपने विचार में अदला बदली की उसी के अनुसार उसकी बाहिरी हालत भी पलट गई. बस यह सच है कि, जब मनुष्य सच्चे दिल से अपने दोषों को दूर करने का यत्न (उपाय) करता है और जल्दी जल्दी बहुत बड़ी २ तरक़्क़ी करता है, उसको परिवर्तन की सफलता (कामयाबी) में से जल्दी गुजरना पड़ता है, याने उसे थोड़े से जमाने में ही बहुतसे हेर फेर का सामना करना पड़ता है.

जीवात्मा अपनी तरफ़ उसी चीज़ को खींचता है जिसका विचार उसके भीतर गुप्तरीति से मौजूद होता है, याने उस चीज़ को जिसे वह प्यार करता है और साथ ही उस चीज़ को भी जिससे डरता है *, वह अपने पर्वरिश किये हुए (पाले हुए) बड़े ख़यालात की ऊंचाई की आख़री हदतक पहुंच जाता है और अपनी अशुद्ध ख़्वाहिशों (इच्छाओं) की सतह (तल) पर गिर पड़ता है. दशाएं (हालतें) वा ज़रिए है जिनके सबब से जीवात्मा अपने आप को पा लेता है याने अपनी धारी हुई मंजिल पर पहुंच जाता है.

---

* इसी सबब से मर्यादापुरुषोत्तम श्रीकृष्ण ने मौत से नहीं डरने की सख़्त हिदायत की है, मौत को अपने पास खींचने वाला भी इन्सान आप ही है, क्योंकि वह मौत से डरता है.

विचार का हरएक बीज जो मनमें बोया जाता है या उसको मनके भीतर गिर पड़ने और जड़ पकड़ने दियाजाता है तो वह देरमें या जल्दी से अपने ही जैसे फल कर्म के रूप में पैदा करता है और मौके और हालात के फल अपनी ही किस्म के मौजूद करता है. भले खयालातसे भले फल और बुरों से बुरे फल पैदा होते हैं.

खयालात की भीतरी दुनियां के मुवाफिक हालात (दशाओं) की बाहिरी दुनियां अपना रूप. ढंग इख्तियार कर लेती है और अच्छे और बुरे लगनेवाले बाहिरी हालात दोनों प्रति. निधि * (कारगुजार) के तौर पर है जो हरएक मनुष्य † के भली भांति अन्तिम परिणाम को प्राप्त होने के लिये काम करते हैं. इसलिये अपनी खेती आप लुणने वाले की तरह से इन्सान सुख और दुःख दोनों से सबक सीखता है (शिक्षा लेता है).

इन्सान अपने भीतरी खयालात और इच्छाओं की पैरवी (अनुकरण) करता हुआ चाहे वह बुरे खयालात की पैरवी करे वा भले खयालात की. ऊंची राह पर चले या नीची पर. आखिर में वह अपनी ज़िन्दगी के बाहिरी हालात की फल प्राप्ति के स्थान में पहुंच जाता है और अपनी करणी का फल भोगता है. तरक्की और सुधार के कानून हरएक जगह मौजूद हैं.

---

* प्रतिनिधी, जो दूसरे के लिये काम करे

† रिफाह् आम के लिये अच्छे नतीजे पैदा करने को.

कोई इन्सान शराबख़ाने (कलाल की दुकान) या जेल-ख़ाने में तक़दीर या संजोग के ज़ुल्म से नहीं आता, बल्कि वह बिगाड़नेवाले ख़यालात और नीच ख़्वाहिशों की पग-डंडी के ज़रिये से वहां पहुंचता है. कोई जाहिर में शुद्ध अन्तः-करण वाला मनुष्य किसी बाहिरी ताक़त के जरिये से ही अचानक किसी जुर्म में गिरिफ़्तार नहीं हुआ करता, बल्कि कोई जुर्म करने का ख़याल एक अर्से से उसके दिल में पो-शीदा तौर से पर्वरिश पाता रहता है और जब मुनासिब मौक़े की घड़ी आजाती है तो उसकी इकट्ठी हुई ताकत को प्रकट करदेता है. बाहिरी हालत इन्सान को बनाती ही नहीं है, बल्कि उसे उसकी भीतरी हालत को खोलकर दिखा देती है.

दुनियां में ऐसे कारण मौजूद नहीं है कि, जिनके सबब से इन्सान बुराई में पड़कर तक्लीफ़ उठावे, बल्कि यह उसी हा-लत में हो सकता है जब कि इन्सान के चित्त का लगाव आप ही बदी की तरफ़ झुके. इसी तरह जबतक आदमी भलाई की तरफ़ लगातार न झुके, बाहिरी ज़िन्दगानी का कोई भी कारण (सबब) ऐसा नहीं है कि, जो उसको नेकी के दरजे पर पहुंचा सके और इन्सान को सच्ची ख़ुशी हासिल हो जावे. इसलिये यह बात साबित हो चुकी है कि इन्सान अपने ख़याल का आपही मालिक और आप-ही हाकिम है और अपने आप को बनाने वाला है और अपने क़िस्मत की सूरत बनानेवाला और उसका निर्मा-ता (ईजाद करनेवाला वा बनानेवाला) आपही है, यहां-तक कि जीवात्मा पैदाइश (उत्पत्ति) के वक़्त भी अपनी

इच्छा से ही आता है और अपनी सांसारिक यात्रा के एक एक कदम पर वह उन्हीं हालातको जिनसे उनका मेलजोल रहा है, अपनी तरफ खैंचता है, जो उसको प्रकट करते हैं और जो उसकी शुद्धता और मलीनता और ताक़त या कमज़ोरी के अक्स (प्रतिबिम्ब) हैं.

इन्सान अपनी तरफ उस चीज़ को नहीं खैंचते जिसको वे चाहते हैं, बल्कि उस चीज को खैंचते हैं जो कि वे खुद हैं, उनके सोच विचार और उनकी तृष्णाएं हरएक पावंद पर छिन्न भिन्न होजाती है, लेकिन उनके भीतरी ख्यालात और इच्छाएं अपनी गिज़ा (खुराक) से चाहे वह गिज़ा पवित्र हो वा अपवित्र पर्वरिश पाती * (पनपती) रहती हैं.

वह अख़्तयार (इल्मइलाही) जो हमारे आख़री नतीजों (अन्तिम परिणामों) की मूरतें बनाता रहता है, हमारे अन्तर में ही है और हमारा अपना आपाही है इन्सान ने अपने

---

* तर्जमा करनेवाले की तरफ से नोट—सोचिये कि जब पवित्र और अपवित्र ख्याली गिज़ा के सबब से पर्वरिश पाकर जीवात्मा वैसाही होजाता है जैसी कि उसकी खुराक है यानें पवित्र ख्याली गिज़ा के खाने से पवित्र और अपवित्र के खाने से अपवित्र, तो क्या मनुष्य का यह फ़र्ज़ (धर्म) नहीं है कि वह भक्ष्य अभक्ष्य (खाने काबिल नहीं खाने काबिल) के विषय पर ध्यान देकर और इन्साफ से सोचे और जब ऐसा करने से वह आपही अभक्ष्य गिज़ा से पर्हेज़ करने लगेगा तो मानो अभक्ष्य भोजनो का छोड़ना ही उसी वक़्त से उसके जीवात्मा को पवित्र बनाने के लिये पवित्र गिज़ा का काम देगा. ध्यान देकर सोचिये

हाथों में आप ही हथकड़ियां डाल रक्खी हैं. ख़याल और कर्म क़िस्मत (भाग्य) के जेलख़ाने के दारोग़ा हैं, जो अपवित्र विचारों के सबब से इन्सान को क़ैद कर देते हैं. मनुष्य को वह चीज़ नहीं मिला करती जिसको कि वह चाहता है या जिसके लिये ईश्वर से प्रार्थना करता है, बल्कि उसको वह वस्तु मिलती है जिसको वह सचाई से हासिल करना चाहता है. उसकी इच्छा और प्रार्थना उसी वक़्त पूरी होती है और उसी वक़्त उनका जवाब मिलता है जब कि वे उसके खयालात और कर्मों के साथ एक रस होती हैं. इस सच्ची बात (सच्चे मसले) की रोशनी में कि "हालात * के विरुद्ध लड़ाई करने का क्या अर्थ † है ?" इसका यह अर्थ है कि मनुष्य लगातार एक नतीजे (कारज वा कार्य) के ख़िलाफ़ बग़ावत (विद्रोह) करता है और जिसके विना (याने अगर वह बगावत न करे तो यों समझना चाहिये कि जबतक वह बग़ावत नहीं करता और नतीजे से नहीं लड़ता) वह हरवक़्त सबब (कारण) को अपने दिल में पालता रहता है और उसकी हिफ़ाज़त (रक्षा) करता रहता है. यह कारण जानबूझ कर शरारत (दुष्टता) या अनजानी कमज़ोरी (निर्बलता) का रूप धारण करलेता है. लेकिन यह कुछ भी क्यों न हो अपनी सर्कशी (विद्रोह) से अपने मालिक की भलाई के उपाय और उद्योग को रोक देता है और इसी तरह से मानो अपना सुधार करने के लिये ज़ोर से चिल्लाता है.

---

* वाक़िआत.

† नतीजा.

इन्सान अपनी बाहिरी दशाओं को संवारने के लिये तो बड़े ही बेचैन (आतुर) होते हैं, लेकिन अपने संवारने के लिये रज़ामंद नहीं होते, यही कारण है कि वे मजबूर रहते हैं, जो मनुष्य अपने आप सूली पर चढ़ने (इच्छाओं को मारने वा इन्द्रियदमन * से मतलब है) से नहीं डरता वह कभी अपने मनोरथों के प्राप्त करने में निष्फल नहीं रह सकता और यह सिद्धान्त जैसा ससार के मनोरथों की सिद्धि के लिये सच्चा है वैसा ही परमार्थहित साधन के लिये भी है, बस जिस आदमी का मतलब दौलत हासिल करना (द्रव्योपार्जन) है, जब उसको दौलत मिलने से पहिले बहुत से दुःख सहन करने पड़ते हैं तो उस आदमी के लिये जो एक शक्तिमान् (ताकतवर) और कांटे के तोल जिन्दगी हासिल करना चाहता है अपनी इन्द्रियों को दमन करने की कितनी ज़रूरत होगी.

एक आदमी जो बहुत ही ग़रीब है, उसको अत्यन्त ही चिन्ता है कि उसकी बाहिरी दशा और घर के आराम के असबाब सुधर जायें, लेकिन वह हमेशा अपने काम से जी चुराता रहता है, यह सोचकर कि उसको काम की उजरत थोड़ी मिलती है इसलिये अपने मालिक को धोखा देने की कोशिश करने में उसको कोई दोष नहीं है काम नहीं करना इस किस्म का आदमी उन साधारण सिद्धान्तों (उसूलों) की शुरू की बातों को भी नहीं समझता जो कि सच्ची बिहबूदी

---

* नफ्सकुशी

(उन्नति) की बुनियाद (मूल) है. ऐसा आदमी अपनी हेठी दशा से ऊंचा उठने के बिल्कुल काबिल ही नहीं है, बल्कि दर-असल वह अपने लिये पहिले से भी ज्यादा बुरी हालतों को अपनी तरफ खैंचता है, क्यौंकि वह सुस्ती (आलस्य), छल, कपट और इन्सानियत के ख़िलाफ़ (मनुष्यत्व के विपरीत) ख़यालात को सोचता है और उन्हीं के मुवाफ़िक़ चलता है. अब एक दौलतमंद की सुनिये कि वह एक दुखदाई रोग का, जो उसके बहुत खाने का नतीजा है, शिकार * बनरहा है, वह अपने रोग से छुटकारा पाने के लिये बहुत कुछ रुपया ख़र्च करने को भी राजी है, लेकिन वह अपनी बहुत खाने की इच्छाओं को छोड़देने के लिये या उनको अपने वश में करलेने के लिये तय्यार नहीं है. वह यह चाहता है कि वह नहीं खाने के काबिल और ज़ायक़ेदार (स्वादिष्ट) चीज़ो को भी हड़प करता रहे और उसकी तन्दुरुस्ती भी ज्यों की त्यौं बनी रहे. ऐसा आदमी हमेशा तन्दुरुस्ती क़ाइम रखने के लिये बिल्कुल नाक़ाबिल (अयोग्य) है, क्योंकि उसने अ-भीतक तन्दुरुस्ती के प्रारंभिक सिद्धान्तों (इब्तिदाई उसूल) को भी नहीं सीखा है

एक कारखाने का मालिक है कि जो ऐसे टेढ़े बांके त-रीक़े इख्तियार करता है, कि मज़दूरों को उनकी ठहराई हुई मज़दूरी नहीं देनी पड़े और पहिले की बनिस्बत ज्यादा नफ़ा कमाने की उम्मेद पर अपने कारख़ाने के मजदूरों की मज़दूरी

---

* बीमारी में मुब्तला है.

घटा देता है. ऐसा आदमी इक़्बालमन्दी हासिल करने (प्रतापी बनने) के बिलकुल नाक़ाबिल है. और जब वह देखता है कि उसकी इज़्ज़त और उसकी दौलत दोनों का दिवाला निकल गया, उस वक़्त वह अपनी दशाओं और दूसरे कारणों पर दोष लगाया करता है और यह नहीं समझता कि वह बिना किसी दूसरे के साझे के अपनी ऐसी हालत बनानेवाला आपही हुआ है.

ये तीन मिसालें (उदाहरण) मैंने सिर्फ इस बात की सच्चाई को भलीभांति जताने के लिये दी है, अगर्चे क़रीब क़रीब हमेशा ही यह बात इन्सान को मालूम न हो कि, इन्सान अपने हालात का पैदा करनेवाला आप ही है, मगर जब वह चाहता तो कोई अच्छा नतीजा हो और उसके भीतरी ख़यालात और इच्छाएं उस नतीजे के मुवाफ़िक़ * नहीं हों, तो मानो वह अपने मनोरथ को पहुंचने के रास्ते में आप ही लगातार रुकावटें पैदा करता है. हम इस तरह के भिन्न २ उदाहरण बहुतसे देसकते हैं, लेकिन उनका लिखना ज़रूरी नहीं है, क्योंकि पढ़नेवाला अगर ख़ुद इस तरह का इरादा करे तो अपने ही मन और अपनी ही ज़िन्दगी में ख़याल के क़ानून का पता लगा सकता है और जब तक वैसा न किया जायेगा सिर्फ़ बाहिरी बातों से दलीलों का काम नहीं लिया जा सकता.

हरसूरत में हालात ऐसे पेचदार है और ख़याल की जड़

---

* मेल मीलान खानेवाली.

इतनी गहरी है और हरएक शख़्स की ख़ुशी की जुदी जुदी हालतें या सूरतें एक दूसरी से इतनी मुख़्तलिफ़ (भिन्न) होती हैं कि किसी शख़्स की पूरी पूरी रूहानी हालत (आत्मिक अवस्था) का फ़ैसला उसके बाहिरी हालात देखकर दूसरा आदमी नहीं कर सकता (अगर्चे ऐसा हो सकता है कि वह शख़्स अपनी आत्मिक अवस्था को आप जानसके). हम देखते है कि एक आदमी कई एक बातों मे ईमानदार है तो भी वह तंगहाल है, साथही उसके दूसरा आदमी कई बातों में बेईमान होने पर भी दौलत हासिल करता है.

अमूमन (साधारणतः) इससे यही नतीजा निकाला जाया करता है कि, पहिला आदमी खास ईमानदारी से निष्फल रहता है और दूसरा अपनी ख़ास बेईमानी के सबब से फलता फूलता है, लेकिन यह सिर्फ एक सरसरी क़यास (साधारण अनुमान) का नतीजा है और यह मान लिया जाता है कि बददयानत आदमी निरा अधर्मी और ईमानदार आदमी बिलकुल नेक है.

परन्तु गहरी जानकारी और अधिकतर विस्तृत अनुभव * के प्रकाश में इस तरह का फ़ैसला गलत साबित होता है, बददयानत आदमी में कुछ न कुछ तारीफ़ के क़ाबिल गुण ऐसे मौजूद होते हैं, जो कि दूसरे में नहीं होते और ईमानदार आदमी में नफ़रत करने काबिल ऐसी बुराइयां वा दोष भी होते हैं जो दूसरे में नहीं होते. ईमानदार आदमी अपनी

---

* गहरा व पूरा तजर्बा.

ईमानदारी के ख्यालात और कामों के भले नतीजे भी पाता है और अपनी बुराइयों के बुरे फल भी भोगता है. इसी तरह से बेईमान अर्थात् अधर्मी आदमी भी अपनी तकलीफ़ और ख़ुशी (दुःख और सुख) का संग्रह करनेवाला आपही है.

इन्सान के कच्चे विचार का ऐसा विश्वास कि एक आदमी अपनी ख़ूबियों (गुणों) के सबब से ही दुःख भोगा करता है. दिल को ख़ुश करनेवाला ज़रूर है, लेकिन जबतक मनुष्य अपने मन के भीतर से हरएक रोगी, कडुवे और मलीन विचार को उखेड़ कर अलग न फेंक दे और हरएक पापिष्ठ कलंकित धब्बे को अपने आत्मा से धो न डाले, क्या कभी इस बात के जानने और कहने का अधिकारी होसकता है कि, दुःख उसकी भलाई के नतीजे हैं और उसके अवगुणों (दोषों) के नतीजे नहीं हैं. हां, कमाल की हद (सिद्धता की सीमा) पर पहुंचने से पहिले रस्ते ही में इन्सान को यह बात अपने मन और अपने आत्मा में अमल करती हुई नज़र आजाती है कि, वह महान नियम याने क़ानून आज़म जो शिर से पांव तक स्वयं न्यायरूप (इन्साफ मुजस्सम) है, कभी भलाई के बदले में बुराई और बुराई के एवज भलाई नहीं देता. इस प्रकार का ज्ञान प्राप्त करके मनुष्य अपनी बीती हुई अज्ञानता और मूर्खता पर नज़र डालने से जान जाता है कि, इस का प्रबन्ध ज़िन्दगी से पहिले भी ठीक था और अब भी ठीक है और उसको यह भी मालूम होजाता है कि उसके पूर्वकाल के भोग चाहे वे भले थे या बुरे, वे उसी के कर्मों और विचारों के फल थे.

उत्तम विचार और भले कर्म कभी बुरे नतीजे पैदा नहीं कर सकते और न बुरे कर्म और विचार भले नतीजे निकाल सकते हैं. यह कहावत ठीक है कि—"निपजे गेहूं गेहुंते, जौ बोये जौ होय।" अर्थात् अन्न से अन्न और कंटीली झाड़ियों से कांटेवाली झाड़ियां ही उत्पन्न होती हैं. इन्सान स्थूल जगत् (माद्दी दुनियां) में इस नियम को समझते हैं और उस पर चलते भी हैं, लेकिन ऐसे बहुत कम आदमी हैं, जो इस क़ानून को बुद्धि और धर्म (सदाचार) सम्बन्धी दुनियां में * भी ऐसा ही मानते हों (अगर्चे इस क़ानून का अमल वहां पर भी ऐसा ही सादा और नहीं बदलने वाला है) और इसी सबब से वह इससे इत्तिफ़ाक़ नहीं करते (सहमत नहीं होते).

दुःख हरहालत में किसी तरफ़ ग़लत ख़याल पैदा करने का नतीजा है. दुःख इस बात की एक निशानी है, कि इन्सान अपनी ज़िन्दगी के क़ानून के मन्शा के बाहिर है, याने उसके मुवाफ़िक़ नहीं चला.

दुःख का सबसे बड़ा और असली फायदा यह है कि, वह आदमी को शुद्ध करदेवे और जो कुछ उसमें खोट और ग़ैरज़रूरी बातें हैं, उनको जलाकर राख कर देवे.

जो आदमी शुद्ध चित्त है उसको दुःख पहुंचना बिलकुल बन्द होजाता है.

---

* अख़लाकी दुनियां.

जिस वक़्त सोने को तपाकर उसका खोट दूर कर दिया जाता है फिर उसके तपाने की ज़रूरत बाकी नहीं रहती, इसी तरह जो आदमी पूरे तौर से साफ़ पाक है, वह कभी दुःख नहीं भोग सकता.

वे हालात जिनसे कि इन्सान अनेक प्रकार के रंज और दुःखों में फँसजाता है, खुद उसके ही दमाग़ी बेसुरेपन (ख़यालात के दुरुस्त न होने) के नतीजे हैं और इसी तरह वे हालात भी, जिनसे वह खुशी के हिंडोले में झूलता (आनन्द की ज़िन्दगी भोगता) है, सिर्फ़ उसी के दमाग़ी सुरीलेपन (ख़यालात की ठीक एकता) के नतीजे हैं. वरकतों वाली वा आनन्द की जिन्दगी ही उत्तम विचारों की सही तराज़ू है, न कि धन दौलत आदि का ज्यादा पास में होना. मतलब यह कि किसी के पास धन माल होने या न होने के सबब से उसके ख़याल का अन्दाजा नहीं लगाना चाहिये. बल्कि जिसे आनन्द प्राप्त है, चाहे उसके पास दौलत हो या न हो वह भले विचार वाला है और जिसके चित्त में शान्ति नहीं है और कमनसीबी में फंसा है उसके पास दौलत होते हुए भी यह नतीजा निकालना ठीक है कि उसके ख़यालात अच्छे नहीं हैं. एक आदमी बुरा होने पर भी धनवान् हो सकता है और एक शख़्स ग़रीब होकर भी नेकनसीब हो सकता है. खुशनसीबी (सौभाग्य) और दौलत दोनों उसी वक़्त इकट्ठी हो सकती हैं, जबकि दौलत ठीक रीति से और बुद्धिमानी से काम में लाई जावे और निर्धन या ग़रीब आदमी उसी वक़्त बदनसीबी के खड्डे में गिर सकता है. जब कि वह यह समझ ले

कि उसकी क़िस्मत ने बेइन्साफ़ी से उस पर यह आपत्ति डालदी है.

गरीबी और इन्द्रियों के वशीभूत होजाना बदक़िस्मती के दो सिरे हैं. एकसां तौर पर ये दोनों बातें गैरकुदरती (अस्वाभाविक) और दमाग़ी बेतर्तीबी (विचारों के अस्तव्यस्त होने) का नतीजा है. इसलिये जबतक कोई आदमी खुश, तन्दुरुस्त और खुशनसीब नहीं है, वह अपनी असली हालत पर नहीं है. खुशी, तन्दुरुस्ती और खुशनसीबी इस बातका नतीजा है कि इन्सान की भीतरी और बाहिरी हालतें उसके इर्द गिर्द के हालात के अनुकूल हैं.

इन्सान उसी वक़्त से इन्सान बनने लगजाता है जिस वक़्त से कि वह रोना भींकना (याने दुनियां के दुःखों की शिकायत करना) छोड़ देता है और उस गुप्त न्याय की ढूंढ भाल करने लगजाता है, जो उसकी ज़िन्दगी का सुधार करता है और जब वह अपने मनको सच्चे प्रबन्ध के अनुकूल बना लेता है तो दूसरे लोगों को यह दोष लगाना छोड़ देता कि, वह उसकी मौजूदा हालत * का सबब था. वह अपने आप को मज़बूत और भलेमानसों के से विचारों के साथ उभारने † लगता है और वह अपने मौजूदा बाहिरी हालात को ठोकरें लगाने के एवज़ वह उनको अपनी जल्दही होनेवाली तरक्की और हो सकनेवाली बातो और

* मुराद है उस बुरी हालत से.

† तरक्की देने लगता है.

अपनी गुप्त ताक़तों का पता लगाने के लिये जो उसके भीतर मौजूद हैं, मदद या ज़रिए के तौर पर काम में लाने लगता है.

मौजूदात (सृष्टि) पर हुकूमत करने वाला उसूल का-नून है, अब्तरी (कुप्रबन्ध) नहीं है, इन्साफ़ (न्याय) ही ज़िन्दगी का जीव और जौहर (मूलतत्त्व) है, बेइन्साफ़ी (अन्याय) नहीं है और दुनियां के आत्मिक राज्य (रू-हानी सल्तनत) में चलाने फिराने और काम काज कराने वा-ली (प्रेरित करनेवाली) और रूप रंग देनवाली ताक़त सत्य ही है न कि असत्य. जब ऐसी बात है तो इन्सान को यह बात जानने के लिये कि जगत् सत्य पर है * खुद भी सच्चा होजाना चाहिये और अपने आप को सत्य बनाने का प्रयोग करते वक्त वह यह बात जान जायेगा कि ज्यों ज्यों वह अपने विचारांश दूसरे लोगों और दूसरी चीजों के विषय में बदलता जाता है त्यों त्यों वे लोग और वे चीज़ें भी और की और होती जाती हैं.

हरएक आदमी में इस सचावट का सबूत मौजूद है, इस लिये नियमपूर्वक रीति से जीवात्मा के भेदों को मविस्तर † प्रकार से जानने और विचारपूर्वक अपनी निरख परख क-रने से जाना जा सकता है. एक आदमी को अपने आपही उसके विचारों को बदलने दो और वह अपने में बहुत ही ज-ल्द होनेवाली तबदीली देखकर अचरज मानेगा और यह

* कायनात रास्ती पर है.

† तफ़्सील.

तबदीली उसकी सांसारिक स्थूल दशा * पर अपना असर डालेगी. लोग ऐसा समझते हैं कि, **मन के विचार को छिपाकर रख सकते हैं,** परन्तु ऐसा हो नहीं सकता, क्योंकि ख़याल जल्दी से आदत बन जाता है और आदत अपनी शक्ल को बाहिरी दशाओं के सांचे में ढाल लेती है, हैवानी (पशुओं के) खयालात शराबख़ोरी (मद्यपान) और अय्याशी † की शक्ल में ढल जाते हैं, जो बीमारी की सूरत में प्रकट होते हैं. हरएक प्रकार के मलीन विचार कमज़ोरी और चित्त की भ्रमना ‡ वा चिन्ता की दशा धारण करते हैं और उनसे बेचैनी (व्याकुलता) और तंगदस्ती की हालत पैदा होजाती है डर, शक (सन्देह) और ढिलमिल यक़ीनी (अर्थात् किसी एक बात पर विश्वास वा निश्चय न होना) के ख़यालात से कमज़ोरी, इन्सानियत के ख़िलाफ़ काम करने का स्वभाव और दुबधाकी आदत ज़ाहिर होती है, जिससे निष्फलता, ग़रीबी (दीनता) और ग़ुलामी की दशाएं अपना साक्षात्‌रूप धारण करती हैं. सुस्त और मरियलपने के विचारों से अधर्मी और मैलेपन की दशा उत्पन्न होती है, जिससे झूठेपन और भिकमगेपन की शक्ल प्रकट होती है. नफ़रत (घृणा) और बदला लेने के ख़यालात से इल्ज़ाम लगाने (दोषारोपण करने) और ज़ोर, ज़ुल्म करने की आदतें

---

* मादी हालत.

† व्यभिचार.

‡ परेशान तबई.

पैदा होती है और इनसे तकलीफ़ और सख्ती की हालतें सामने आती हैं. हर एक क़िस्म की खुदगरज़ी (स्वार्थनिष्ठा) के ख़यालों से आत्म-अभिमान * की आदत ज़ाहिर होती है. और यह आदत थोड़ी या बहुत तकलीफ़ की सूरत में प्रकट होजाती है, लेकिन् बख़िलाफ़ इसके हर एक क़िस्म के उत्तमता के विचार दया और कृपा की आदत के रूप में प्रकट होते हैं और उनसे हमेशा प्रसन्नचित्त रहने और नूरानी (प्रसन्नमुख रहने) की हालतें पैदा होती हैं. शुद्ध विचारों से पर्हेज़गारी (संयम और अपने आप पर हुकूमत करने अर्थात् अपनी इन्द्रियों पर अधिकार रखने की आदतें पैदा होती हैं, जिनसे आसूदगी और अमनचैन की हालतें प्रत्यक्ष प्रकट होजाती हैं. बहादुरी खुदएतबारी (अपने आप पर भरोसा रखने) और सत्य असत्य का निर्धार करने, वा हुकूमत के ख़यालात से मर्दाना आदतें पैदा होती हैं. मज़बूत (दृढ़) और हौसला (साहस) बढ़ानेवाले ख़यालात, शुद्धता और मुस्तैदी की आदतों में क़ायम होते हैं और उनसे चित्त को आनन्द देनेवाले हालात पैदा होजाते हैं, बड़ापन और क्षमा के विचारों से भलमन्साई की आदत पैदा होजाती है और उससे रक्षा और बचाव की शक्ल साक्षात्रूप में प्रकट होती है. प्रेम और निष्कामता के विचारों से परोपकार और अपने आपको विसरा देने † की आदत पैदा होती है और उससे सच्ची और

---

* मतलब है खुदबीनी से.

† जिसे फ़ारसी में "खुदफ़रामोशी" कहते हैं.

सदा बनी रहनेवाली सफलता और सच्ची दौलत प्राप्त होने की शक्ल ज़ाहिर होजाती है.

ख़यालात का कोई ख़ास सिलसिला जो दिल में लगातार कायम किया जायेगा, वह चाहे अच्छा हो या बुरा, लेकिन यह कभी नहीं होसकता कि, उसका असर मनुष्य के चालचलन और ज़िन्दगी के बाहिरी हालात पर न हो. माना कि इन्सान सीधे तौर से अपने बाहिरी हालात को नहीं चुन सकता, परन्तु वह अपने ख़यालात को चुन सकता है और इस तरह से चाहे सीधे तौर से नहीं तो भी निःसन्देह वह अपनी जिन्दगी के बाहिरी हालात की शक्ल पैदा कर लेता है.

इन ख़यालात को काम में लानेवाली सूरत इख्तियार करने में जिनको कोई आदमी सबसे ज्यादा बढ़ाना चाहता है, कुदरत (प्रकृति) हरएक शख्स की मदद किया करती है और ऐसे मौके देती है कि जिनसे बड़ी ही तेज़ी (शीघ्रता) के साथ भले और बुरे दोनों तरहके ख़यालात चौड़े आजावें, अर्थात् प्रत्यक्ष दशाओं के रूप में प्रकट होजावें.

एक आदमी को अपने पापिष्ठ विचारों के दूर करने की देर है कि, सारी दुनियां उसपर क्षमा करने लग जावेगी (अर्थात् उसके गुजिश्ता दोषों पर ध्यान नहीं देगी) और उसकी मदद (सहायता) के लिये तय्यार होजायेगी. एक आदमी को अपने कमज़ोर और मुरझाये हुए विचारों से अलग होने दो, फिर तुम देखोगे कि हरतरफ़ से मौके (अवसर) उसकी पेशवाई (स्वागत) के लिये दौड़ेंगे और

उसके बलवान् इरादों को मदद देने लगेंगे, एक शख्स को अपने उत्तम विचारों को मजबूत करने दो और फिर तुम को मालूम होजायगा कि कोई बदक़िस्मती (खोटी तक़दीर) भी उसे शर्मिन्दगी (अपमान) और ज़िल्लत (अधमता) की दशा में जकड़बन्द नहीं करसकती. दुनियां तुम्हारा कैलीडोस्कोप * (Kaleido scope) है. जिसमें तुमको अपने ही हरवक्त हरकत करनेवाले (चंचल वा एक जगह स्थिर न रहनेवाले) विचारों की तसवीरें गिरगट के रंगों की तरह भिन्न भिन्न रूपमें दिखाई देती हैं.

दोहा ॥

जैसे करत विचार तुम, आज हिये निज मांहि ॥
बनहु काल तैसे हि तुम, यामें संशय नांहि ॥ १ ॥
निष्फलता के धैर्य हिन, है यह सारी बात ॥
कहा कहा हम करि सकें. हैं ऐसे हालात ॥ २ ॥
पर स्वतन्त्र जीवातमा, याहि निपट थिन नित्त ॥
निष्फलता के शब्दनें, जानहु सत्य सुमित्त ॥ ३ ॥
है तेरो जीवातमा, स्वामी यरको जान ॥
अरु अधीश सब काल को, या सिवाय नहिं आन ॥ ४ ॥
नट संजोग यातें डरत, स्वामिदशा 1 सिरनाय ॥

---

* एक क़िस्म का खिलौना है. जिसके छोटे छोटे कांचों में से सैकड़ों तरह के रंग दिखाई देते हैं.

1 शाहि हालात.

हाथ जोड़ सेवा करे, चाकर सम नित धाय ॥ ५ ॥
है मनुष्य में गुप्त बल, वाको हृदय विचार ॥
जीवातम के शिषू जिम, समझ ताहि निरधार ॥ ६ ॥
जदपि कोट व्है बज्रसम, आड़े अतिहि कठोर ॥
सवें तोड़ यह जात है, जंह चाहत तंह ठोर ॥ ७ ॥
व्है विलम्ब जदपि कहूं, चित व्याकुल मत होय ॥
धारि सदा सन्तोष हिय, बुद्धिमान जो होय ॥ ८ ॥
जीवातम नर को जबै, चढ़ो शिखर पर जाय ॥
किये हुकम चढ़िके तहां, ताने जब इजराय ॥ ९ ॥
देवगणन को काहि विध, बसन चलत कछु फेर ॥
आज्ञा मानत ही बने, यामें हेर न फेर ॥ १० ॥

(बालमुकुन्द).

तन्दुरुस्ती (स्वास्थ्य) और जिस्म (शरीर) पर ख़याल का असर ॥ (३)

जिस्म (शरीर) दमाग़ अथवा मन का नौकर है, शरीर दमाग़ (मस्तिष्क) के हुक्मों की तामील करता है, चाहे वे हुक्म इरादा करके दियेजावें या विना इरादे ज़ाहिर किये जायें, लेकिन यह बात ज़ुरूर है कि नाजायज़ (अनुचित) ख़यालात का हुक्म उठाने से शरीर वहुत जल्द रोग और विनाश के फन्दे में फंसजाता है और अच्छे नतीजे पैदा करनेवाले ख़यालात के हुक्मों की तामील करने से वह ख़ूबसूरत और ताक़तवर बन जाता है.

हालात और वाक़िआत (घटनाओं) की तरह से बीमारी और तन्दुरुस्ती की जड़ भी ख़याल में ही उगी हुई है. बीमारी के ख़यालात रोगी शरीर की सूरत में अपने आप को ज़ाहिर करते हैं. यह बात साबित हो चुकी है कि ख़ौफ़ (भय वा डर) के ख़याल‑लात इतनी ही जल्दी आदमी को मार डालते हैं जितनी जल्दी कि बन्दूक की गोली. और चाहे इतनी तेज़ी (जल्दी) से नहीं तो भी इस में किसी तरह का शक नहीं है कि हज़ारों मनुष्यों को मारडालते हैं. जिन लोगों को बीमारियों का डर लगा र‑हता है वे ही लोग बीमार पड़ा करते हैं. चिन्ता और बेचैनी सारे शरीर को बिगाड़ देती है. वह शरीर में रोग के क़ुबूल (ग्रहण) करने की क़ाबिलयत (योग्यता) पैदा कर देती है, अर्थात् शरीर की ऐसी हालत हो जाती है कि जिससे रोग श‑रीर में जल्द ही अपना अमल दख़ल कर लेता है और मैले ख़यालात, चाहे वे चाहकर काम में न लाये गये हों, पलभर में शरीर के सारे रग पट्ठों की बातर्तीब हालत (संस्थिति) को छिन्न भिन्न करदेते हैं.

मज़बूत (बलिष्ठ), शुद्ध और ख़ुशी के ख़यालात शरीर को बल, पराक्रम और रंगरूप के सांचे में ढाल देते हैं (अ‑र्थात् ऐसे विचार करते रहने से शरीर में बल और रूप दोनों पैदा होते हैं). शरीर एक नरम और सूरत क़ुबूल करनेवाला (अर्थात् जिसपर जैसा ठप्पा जमाया जावे वैसा उपड़ आवे) यंत्र * है, जो उन्हीं ख़यालात की पैरवी करने लगता है, जिनका नक़्शा (चिन्ह) उस पर जमाया जाता है और ख़याल

---

* बाजा

से पैदा हुई आदतें उस पर अपना भला या बुरा असर डालती हैं.

इन्सान जिस वक़्त तक मैले खयालात फैलाते रहते हैं उस वक़्त तक उनका खून लगातार गन्दा और ज़हरीला होता रहता है. पाक और पवित्र दिल में से पवित्र जीवन और पवित्र शरीर जन्म धारण करता है और अपवित्र दिल में से अपवित्र जीवन और जीर्ण शरीर प्रकट होता है. खयाल ही काम का, ज़िन्दगी (जीवन) का और प्रकाश का सोता या झरना है, इसलिये पहिले सोते * को साफ़ पाक करलो फिर सब कुछ साफ़ और पाक होजायेगा.

सिर्फ़ ग़िज़ा (भोजन) का बदलना उस आदमी की कुछ सहायता नहीं करेगा, जो कि अपने विचारों को नहीं बदलेगा. याद रक्खो कि, जो आदमी अपने विचारों को शुद्ध करलेता है, उसको फिर अभक्ष्य भोजन की इच्छा ही नहीं रहती. शुद्ध विचारों से उत्तम आदतें पैदा होती हैं. वह मनुष्य जो कि त्यागी, महात्मा वा सन्त कहलाता है और अपने शरीर को जल से धोकर साफ़ (स्वच्छ) नहीं रखता, महात्मा नहीं है. जिस आदमी ने अपने ख़यालात को शुद्ध और मज़बूत (बलिष्ठ) कर लिया है, उसको खुर्दबीन (सूक्ष्म दर्शक-यन्त्र) से दिखाई देनेवाले बीमारी के ज़हरीले कीड़ों की बाबत कुछ सोचने की ज़ुरूरत ही बाक़ी नहीं रहती. अगर तुम अपने शरीर की हिफ़ाज़त रखना चाहते हो तो अपने मन को

(*) झरना=सर चश्मा

वश में रक्खो. अगर तुम अपने शरीर की नये सिर से मर-म्मत (जीर्णोद्धार) करना चाहते हो तो अपने मन को पवित्र बनाओ, बैर विरोध, नाउम्मेदी (निराशा), हिम्मत हारने (हतोत्साह) के विचार, शरीर की आरोग्यता (तन्दुरुस्ती) और खूबसूरती को नष्ट कर देते हैं. स्वभाव का कड़वापन (तुर्शरूई) इत्तिफ़ाक़ से अथवा बिना कारण पैदा नहीं होता, बल्कि चिड़ चिड़े ख़यालात से पैदा होता है. झुर्रियां जिनसे कि आदमी की शक्ल बिगड़ जाती है, बेवक़ूफ़ी (मूर्खता), गुस्से के जोश और घमंड के विचारों के सबब से पड़जाती हैं.

मैं एक औरत को जिसकी ९६ (छियानवें) वर्ष की उमर है, जानता हूं. जिसके चिहरे की चमक दमक और भोलापन निरे जवान लड़कों का सा है. इसी तरह एक अधेड़ उमर के आदमी को भी अच्छी तरह से जानता हूं, लेकिन उसका चिहरा बिगड़ गया वा भद्दा होगया है. पहिली * हालत मिज़ाज की नरमी और चित्तकी प्रफुल्लता का नतीजा है और दूसरी † हालत गुस्से के जोश और बेसबरी (असन्तुष्टता) से पैदा हुई है.

जैसे कि तुम्हारा मकान उस वक़्त तक साफ सुथरा और तुमको तन्दुरुस्ती देनेवाला (स्वास्थ्यप्रद) नहीं हो सकता, जब तक कि तुम उसमें बिना किसी रुकावट के धूप और हवा को न आने दो. इसी तरह ख़ुशी, नेकदिली और शान्ति के

---

* बुढ़िया की हालत

† अधेड़ उमर के आदमी की हालत.

विचारों को अपने मन में आज़ादी से दाख़िल (प्रवेश) करने का लाज़मी (अवश्य भवनीय) नतीजा यह है कि, मनुष्य का शरीर बलवान् और पुष्ट हो और उसके चिहरे से प्रफुल्लता, नूर (चमकदमक) और शान्ति प्रकट हो.

बूढ़े आदमियों में कई एक के चिहरों पर तो हमदर्दी (करुणा वा सहानुभूति) की झुर्रियां पाईजाती हैं, कितने एक के चिहरों पर दृढ़ता और पवित्र ख़यालात की दिखाई देती हैं और बाज़ों के चेहरों पर ग़ुस्से के जोश की झुर्रियां देखने में आती हैं और ऐसा कौन शख्स़ है जो इनकी पहिचान नहीं करसकता. जिन लोगों ने अपनी ज़िन्दगी सच्चाई पर चल कर बिताई है, उनके लिये उनका बुढ़ापा ढलते हुए सूरज की तरह से शान्ति और अमनचैन की हालत में सहज ही बीतजाता है. मैंने हाल में एक फ़िलासफ़र (तत्वज्ञानी) को मरते हुए देखा है. सिवाय अवस्था के वह और किसी तरह से बूढ़ा नहीं था. जिस तरह की शान्ति और नरमी से वह जीवन व्यतीत करता था, उसी सूरत से उसने प्राण तजे.

जिस्मानी (शारीरिक) बीमारियों के मिटाने में ख़ुशी के ख़यालात से बढ़कर और कोई हकीम, वैद्य नहीं है. रंजोग़म (शोक) की छाया को दूर करने के लिये दुनियां में कोई तसल्ली देनेवाली चीज़ ऐसी नहीं है, जो नेकनीयती की बराबरी करसके. लगातार बदनीयती, झूठ त्याग, रश्क (डाह) * और वैर विरोध के विचारों में फंसा रहने वा

(*) दूसरे की उत्तम हालत देखकर जलना.

गोते खानेवाला आदमी अपने लिये एक जेलखाने की कोठरी बनालेता है लेकिन सब की भलाई का खयाल करना, हरएक आदमी के साथ दर्प से मिलना और बुर्दबारी (गंभीरता) से हरएक आदमी की भलाइयों पर निगाह डालना. सीखना और इसी प्रकार के बेगरजाना (निस्पृही) खयालात स्वर्ग के दरवाज़े हैं. और जो शख्स हररोज़ हरएक आदमी के विषय में अमन चैन के खयालात सोचता रहेगा. उसको पूर्ण शान्ति प्राप्त होगी.

ख़याल (विचार) और मक़सूद (मनोरथ) ॥ (४)

जबतक विचार को मनोरथ के साथ मिलाया वा जोड़ा न जाये, उस वक्त तक मानो जैसा कि चाहिये वैसा साथी हाथ नहीं लगा. मतलब यह कि जब तक मनोरथ और खयाल एक न किया जाये अर्थात् जो मनोरथ हो वही विचार हो और जो खयाल हो वही मनोरथ हो, ऐसा न होवे तबतक आदमी का मनोरथ पूरा नहीं हो सकता. लेकिन ऐसे लोग बहुत ही हैं जो अपने विचार के जहाज़ को ज़िन्दगी के समुद्र में बह जाने के लिये छोड़ देते हैं, याने वे अपने खयाल को डांवाडोल बहने देते हैं और वह जहाज़ (नौका), जिसका मांझी (चलानेवाला) साथ न हो, लहरों के थपेड़े खाता हुआ बेरोक इधर उधर फिरता है, इसी तरह बिना मनोरथ का खयाली जहाज़ डावांडोल हचकोले खाता हुआ मारा २ फिरता है. किसी मतलब को ध्यान में न रखना ऐब (दोष) है, इसलिये जो यह चहाता हो कि, उसका जहाज टकराने और नुकसान

पहुंचने से बचारहे तो उसे ऐसे वहते रहने को कभी जारी न रखना चाहिये. जिन लोगों की ज़िन्दगी का कोई ख़ास क़ाइम किया हुआ मनोरथ नहीं है, वे छोटे मोटे सोच, चिन्ताओं, भय, तकलीफ़ों और मुसीबतों का शिकार आसानी से होजाते हैं और ये सब की सब कमज़ोरी की निशानियां (चिन्ह) हैं, जिनसे निष्फलता, रंज (शोक) और नुक्सान (हानि) का मुंह निश्चय करके देखना पड़ता है, चाहे वह भिन्न भिन्न तरीकों और और सूरतों से ही क्यों न हों. चूंकि कमजोरी से आदमी उसी प्रकारकी विपत्तियों * में पड़ सकता है जिनमें कि वह अपने आपके किये हुए पापों के सबब से फंस सकता है, इसलिये दुनियां मे ताक़त को जाहिर करनेवाली कमजोरी नहीं ठहर सकती.

इन्सान को अपने मनमें किसी उचित मनोरथ का विचार करना चाहिये और उसको पूरा करने की कोशिश करनी चाहिये. उसे चाहिये कि, वह उस मनोरथ को अपने धारे हुए विचारो का निशान बनावे. यही क़ाइम किया हुआ निशान इन्सान की मौजूदा आदत के मुवाफ़िक़ याने अगर इन्सान की ख्वाहिश (इच्छा) आत्मा की उन्नति के विषय में है तो वह आत्मिक पद को पहुंचने की सीढ़ी की सूरत में बन जाता है और सांसारिक इच्छाओं के अनुसार सांसारिक मनोरथ होजाता है. परन्तु चाहे कुछ भी क्यों न हो, मनुष्य को चाहिये कि वह दृढ़चित्त से अपनी ख़याली ताक़तों

---

* आफ़तें=मुसीबतें,

(विचारशक्तियों) को अपने मनोरथ के निशाने पर जो उसकी निगाह के सामने है, क़ाइम करें. इन्सान को उचित है कि, वह उस मनोरथ को अपना सबसे बड़ा फ़र्ज़ (कर्तव्य) बनावे और मनोरथ की सिद्धि के लिये अपनी ज़िन्दगी को अर्पण करदेवे और अपने ख़यालात को बेजा (अनुचित) मनोकल्पनाओं *, अनुचित इच्छाओं और निकम्मी बातों की तरफ़ जाने से रोके, अपने ख़यालात को एक जगह † इकट्ठा करने अर्थात् चित्तवृत्तियों को एकाग्र करके एक तरफ़ लगाने और अपने आत्मा पर हुकूमत करने का राजाई तरीक़ा यही है. यह ज़रूरी बात है कि जबतक इन्सान अपनी कमज़ोरी को दबा नहीं देवेगा ‡ तबतक वह अपना मतलब हासिल करने में बार बार निष्फल होता रहेगा. फिर यही इसकी लगातार कोशिश (उद्योग) उसकी आदतों में मज़बूती (दृढ़ता) पैदा करेगी और यही कोशिश उसकी सच्ची सफलता की सच्ची कसौटी क़ाइम करदेगी और इसी जगह से उसकी दृढ़ शक्ति और फ़तहमन्दी (विजय) का नया दौर (चक्र) शुरू होजायेगा.

जिन लोगों को अपने बड़े मनोरथ की समझ बूझ नहीं है, उनको उचित है कि वे अपने विचार, अपने फ़र्ज़ को ठीक ठीक पूरा करने की तरफ़ लगावें. चाहे वह फ़र्ज़ ज़ाहिर में कि-

---

* बेजा तोहमात=नारवा ख्वाहिशात=लगवियात ।

† एक मर्कज़ पर.

‡ ग़ालिब न आवेगा.

तना ही छोटासा क्यों न हो. सिर्फ़ इसी तरीक़े (रीति) से विचार वा ख़यालात एकाग्र और एक जगह क़ाइम किये जासकते हैं और अपने मुश्किल से मुश्किल और बड़े से बड़े कामों को पूरा करने के इरादे और ताक़त को उभार सकते हैं और जब हम ऐसा कर चुकेंगे तो कोई बात भी ऐसी बाक़ी नहीं रहेगी जिसको हम न कर सकेंगे.

सबसे ज्यादा पस्तहिम्मत (कमहिम्मत वाला) आदमी भी अपनी कमज़ोरी से वाक़िफ़ होकर और इस सचावट का यक़ीन करके कि—

"ताक़त हमेशा उद्योग और अभ्यास से ही बढ़ाई जा सकती है"

फ़ौरन ही कोशिश शुरू करदेगा और कोशिश से कोशिश को, दृढ़ता से दृढ़ता को और ताकत से ताक़त को आपस में जोड़कर अपनी तरक्क़ी को रोक नहीं सकेगा और आख़िर को वह आदमी अपने में ईश्वरीय शक्ति पैदा कर लेगा.

जिस तरह से कि शारीरिक * कमज़ोर आदमी सावधानी और लगातार कसरत से हट्टा कट्टा और फुर्तीला होजाता है, उसी तरह से बोदे ख़यालातवाला आदमी अपने आप को लगातार उत्तम ख़यालात के सोचते रहने के अभ्यास से बलवान बना सकता है.

ऐसे विचार जिनका कोई मतलब वा मनोरथ न हो और अपनी कमज़ोरी को अलग रखदेना और मनोरथवाले

* जिस्मानी

ख़यालात को सोचना ही उन बड़े ख़याल (महत् विचार) वाले महात्माओं के दरजे में दाख़िल होना (अर्थात् पद को पहुंचना) है. जोकि निष्फलताको भी सफलता के वांछित स्थान * पर पहुंचने के बहुतसे रस्तों में से एक रस्ता समझते हैं, हर क़िस्म की हालत से अपनी चाकरी या काम लेते हैं, मज़बूती से ख़याल करते हैं, निर्भय होकर कोशिश करते हैं और मालिकाना रीति से हरएक काम को पूरा करते हैं. आदमी को चाहिये कि, अपने मनोरथ पर ध्यान रखते हुए दमाग़ी तौर पर (सोच विचार द्वारा) अपने वांछित स्थान पर पहुंचने का एक सीधा रस्ता बनालेवे और अपने दाएं बाएं निगाह उठाकर न देखे.

कुलही सन्देहों और डर को जड़से उखेड़ कर बाहिर फेंकदेना चाहिये, क्योंकि ये तोड़ फोड़ करनेवाले तत्त्व हैं, जोकि उपाय और उद्योग की सीधी सड़क को तोड़ डालते हैं और इनसे इन्सान को निष्फलता का मुंह देखना पड़ता है.

शक और डर के ख़यालात से न तो कभी कोई काम पूरा हुआ और न हो सकता है, ये हमेशा निष्फलता के खड्डे में आदमी को ढकेल देते हैं. जहां सन्देह और डरका प्रवेश हुआ वहां से मतलब (मनोरथ), ताक़त और काम करने की शक्ति के ख़यालात तुरन्त ही छू ˡ होजाते हैं.

काम करने की इच्छा सिर्फ इस बात के जानने से उत्पन्न

हुआ करती है कि—"हम काम कर सकते हैं" डर और शक इल्म (विद्या) के बहुत बड़े दुश्मन हैं और जो आदमी डर और शक की हिम्मत * बढ़ाता है और जो विद्या के इन वैरि-यों को कत्ल नहीं करता वह अपने आप को हरएक क़दम पर क़त्ल करता है.

जिस आदमी ने शक और शुबह पर फ़तह पा ली, उसने निश्चय तौर से निष्फलता को जीत लिया. उसका हरएक ख़याल ताक़त से मिला हुआ होता है. वह सारी मुश्किलात (कठिनाइयों) का सामना दिलेरी (हियाव) से करता है और बुद्धिमानी से उन पर फ़तह पा लेता है. इसके मनोरथों के पौदे या झाड़ अपनी मौसमी फ़सल पर लगाये जाते हैं. वे ऐसी खूबी से बौराते (फूलते) और फलते हैं कि उनके फल समय से पहिले (अर्थात् पकने से पहिले) ही टपक कर ज-मीन पर नहीं गिर सकते.

वह ख़याल जिसको निडर होकर मनोरथ के साथ मिला-या जावे, एक पैदा करनेवाली ताक़त बनजाता है. जो आ-दमी इस बात को जानता है वह उस हालत के मुक़ाबले में ज़्यादा अच्छा और ज़्यादा ताकतवर बनने के लिये तय्यार है; जिसमें कि इन्सान अंडबंड विचारों और दुवधावाली मिथ्या कल्पनाओं की पोट के जैसा हुआ करता है और जो आदमी इस पर अमल करता है वह अपनी दमाग़ी ताकतों (मस्तिष्क शक्तियों) का एक सावचेत और होशियार हुक्-

---

* मतलब है तरक्की देने से.

मत करनेवाला है. मतलब यह कि जो शख्स सिर्फ इस बात को जानता ही है (कि अगर निडर होकर विचार के साथ मनोरथ को मिलाया जावे तो मनुष्य में दृष्टि सृष्टि की ताकत पैदा होजाती है, अर्थात् वह जहां और जो कुछ चाहे पैदा कर सकता है), वह उस आदमी से हजार गुणा बढ़कर है, जो अभीतक इस बात को जानता भी नहीं है. और जो शख्स इस पर अमल भी करता है, याने निर्भय होकर विचार के साथ अपने मनोरथ को मिला देता है, वह निस्सन्देह अपनी दमागी ताकतों का सावचेत और होशियार हुकूमत करनेवाला और अपने ख्याल की पूरी ताकत के ज़रिए से जो काम चाहे कर सकता है.

कामयाबी (सफलता) के लिये ख्यालात (विचारों) की कारपर्दाज़ी (कार्यप्रवर्त्तन). (५)

हरएक वह काम जिसमें आदमी सफल होता है और हरएक ऐसा काम जिसमें आदमी निष्फलता को प्राप्त होता है, खुद उस ही के विचारांश का नतीजा है. एक ऐसी इन्तिज़ाम करनेवाली (प्रबन्ध करनेवाली) सृष्टि में जहां बेतरतीबी वा गड़बड़ का दखल नाममात्र को भी नहीं है वहां हरएक आदमी की निजकी ज़िम्मेदारी का होना ज़रूरी है. हरएक आदमी की कमज़ोरी (निर्बलता) और ताकतवरी (बलिष्ठता), पवित्रता और अपवित्रता खास उसमें मुत्अल्लक (स-

म्बन्ध) रखती है, किसी दूसरे आदमी से नहीं. ये बातें वही आदमी पैदा करता है, न कोई दूसरा. इसी तरह से जो कुछ किसी की हालत (दशा) है वह ख़ुद * उसकी ही है, नकि किसी दूसरे आदमी की. अपनी तकलीफ़ और अपनी ख़ुशी की हालत को हरएक आदमी अपने आपही सुलझा सकता है. जैसा कोई आदमी विचार करता है वैसा ही वह होता है. जिस प्रकार के ख़यालात कोई आदमी लगातार सोचता रहता है वैसी ही दशा क़ाइम होजाती है. कोई ताक़तवर (शक्तिमान्) आदमी किसी कमजोर की मदद नहीं कर सकता, जबतक कि वह कमज़ोर आपही मदद चाहने के लिये तय्यार न हो और यह भी उसके साथ ही है कि, कमज़ोर आदमी अपनी कोशिश से अपने आपही अपने में उस ताक़त को पैदा करे और बढ़ावे कि, जिस ताक़त की तारीफ़ (प्रशंसा) वह दूसरे आदमी में देखकर किया करता है, क्योंकि अपनी हालत को हरएक आदमी आपही बदलता है, दूसरे का उसमें दख़ल नहीं है.

लोगों का ऐसा खयाल करना और कहना एक मामूली बात होगई है कि "बहुतसे लोग इसलिये ग़ुलाम वा चाकर बनगये कि एक आदमी निर्दयी और अन्यायी + है, बस हमको उस ज़ालिम आदमी से नफ़रत करनी चाहिये, जो अपने ज़ुल्म से ग़रीबों को अपना ग़ुलाम बनाता है",

* मतलब है कि यह उसी के ख़यालात का नतीजा है.

+ याने ग़ुलामों को कब्ज़े में रखनेवाला.

लेकिन अब कितने एक समझदारों की राय (मत) इस फ़ैसले के खिलाफ़ है. वह कहते हैं कि एक आदमी ज़ालिम इसलिये ही है कि बहुतसे मूर्ख और सिड़ी गुलाम बनने के लिये तय्यार हैं. इसलिये हमें गुलामों को तुच्छ (हक़ीर) समझना चाहिये, परन्तु हक़ीक़त यों है कि ज़ालिम और गुलाम अज्ञानता की हालत में एक दूसरे के काम में शामिल है और चाहे प्रत्यक्ष (ज़ाहिर) मे ऐसा ही दीखता है कि, वे एक दूसरे को सता रहे हैं, लेकिन असल में वे अपने आप को मुसीबत में डालने का उपाय वा प्रबन्ध किया करते हैं. जिस आदमी को पूर्ण ज्ञान है वह ज़ालिम के जुल्म और जुल्म सहनेवाले की कमज़ोरी में एक ही क़ानून (अर्थात् नियम) को काम करते हुए देखता है और जो आदमी प्रेम की अन्तिम सीमा * पर पहुंच चुका है वह दोनों हालतों में तकलीफ ही देखता है, वह दोनों में से किसी पर भी दोष नहीं लगाता. और जिस मनुष्य में पूर्ण दया है वह सतानेवाले और सताये जानेवाले दोनों को अपनी छाती से लगाता है. लेकिन हां, जिस आदमी ने अपनी सारी कमजोरियों को जीत लिया है और जिसने खुदगरज़ी (स्वार्थ) के सारे विचारों को बिल्कुल दूर कर दिया है उसको न ज़ालिम (अत्याचारी) से कुछ तअल्लुक़ रहता है, न जुल्म सहनेवाले से, वह स्वतन्त्र † वा मुक्त है.

मनुष्य अपने विचारों को ऊंचा करने से ही ऊंचा

---

* हदेकमाल.

† आज़ाद.

उठ सकता है, फतह प्राप्त कर सकता है और फलीभूत * हो सकता है. और जो आदमी अपने ख़यालात को ऊंचा करने से किनारा करता वा टाला लेता है, वह सदा कमज़ोर, मारखाने की निशानी, दशाहीन और उदासचित्त रहेगा.

इससे पहिले कि इन्सान किसी बात में सफलता प्राप्त करे, चाहे वह बात सांसारिक बातों में से ही क्यों न हो, यह ज़रूरी नहीं है कि, वह ग़ुलामी के ख़यालात, पशुओं के जैसी दुर्वासनाओं † और कामासक्ति ‡ विषयक विचारो और खुदग़रज़ी (स्वार्थनिष्ठा) के विचारों से अपने ख़यालात को ज़्यादा ऊंचा उठाले. यह कुछ ज़रूरी नहीं है कि. हैवानी ख़यालात और खुदग़रज़ी के जड़मूल से दूर करदेने से ही सफलता प्राप्त हो, लेकिन इसके एक हिस्से का तो ज़रूर ही बलिदान करना पड़ता है (अर्थात् त्याग देना पड़ता है). एक आदमी जिसका पहिला ख़याल पशुओं के जैसी दुर्वासनाओं से प्यार करना है, वह साफतौर से न तो कोई बात सोच सकता है और न बाकाइदा तौर पर (नियमपूर्वक रीति से) कोई उपाय निकाल सकता है. उसको अपनी गुप्त ताक़तों का पता नहीं लग सकता और न वह उन्हें बढ़ा सकता है और हरएक काम मे निष्फल रहता है, इसका कारण सिर्फ़ यह है कि उसने शुरू से ही अपने ख़यालात को

---

* कामयाब

† इच्छा ख़्वाहिशात.

‡ जिसे फारसी में शहवानी कहते हैं.

वाकाइदा तौर पर अपने वश में नहीं रक्खा, इसलिये वह इस काबिल नहीं है कि कारोबार पर हुकूमत करसके और भारी जिम्मेदारियों को अपने ऊपर लेसके, वह स्वाधीनता से अपना कारोबार करने और अपने पैरों के बल आप खड़ा होने के काबिल नहीं है. वह अपने थोड़े से विचारों की हद (सीमा) से बाहिर, जिनको कि उसने चुन लिया है, नहीं जासकता।

दुनियां में किसी किस्मकी तरक्की (उन्नति) और कोई सफलता पशुओं के जैसी दुर्वासनाओं का त्याग किये बिना प्राप्त नहीं होसकती. इन्सानकी सफलता दुनियां में उसी अन्दाज या अनुपात से होगी जिस अन्दाज से कि वह अपने हैवानी ख्यालात (पशुवत् विचारों) को दूर करेगा और अपने मन को अपने उपायों के हर भरे * होने में लगायेगा और अपने इरादे का खास अपने ही पर भरोसा रखने के लिये मजबूत करेगा. और जितनी ज्यादा आदमियत से अपने विचारों को वह ऊंचा करेगा उसी अन्दाज से वह ईमानदार और सचाई पर चलनेवाला होजायगा, उसकी सफलता अधिकतर होगी और उसके बड़े बड़े भारी और मुश्किल काम भी बरकत देनेवाले और चिरस्थायी (बहुत समय तक कायम रहनेवाले) होंगे.

दुनियां * कभी किसी लालची, अधर्मी और किसी दुष्ट आदमी पर अपनी कृपादृष्टि नहीं करती, चाहे कभी कभी सिर्फ़ ऊपर की बातों के देखने से ऐसा ज़ाहिर होता हो बल्कि कुदरत हमेशा दयानतदार (धार्मिक), बड़ी हिम्मतवाले (साहसी) और परहेज़गार (निष्पापी) लोगों की मदद किया करती है. हरएक ज़माने के बड़े बड़े विद्वानों ने इस विषय को जुदे जुदे तौर से बयान किया है और जो आदमी उनके वचन की सचावट साबित किया चाहता है और जानना चाहता है उसको उचित है कि वह अपने विचारों को ऊंचा करने के ज़रिये से अपने आपको ज्यादा परहेजगार (निष्पापी वा शुद्धचित्त) बनाता चला जाये.

बुद्धि वा ज्ञानविषयक सफलताए उन विचारों के नतीजे हैं, जिन विचारों को विद्या वा ज्ञान की खोज के लिये एकाग्र † किया जाता है. यह दूसरी बात है कि कभी कभी इस प्रकारकी सफलताओं को आत्म-अभिमान ‡ और तृष्णा से सम्बन्ध रखनेवाली बताया जावे, लेकिन् असलियत यों है कि आत्म-अभिमान और तृष्णा के गुणों से ये बातें पैदा नहीं हो सकतीं, बल्कि यह लगातार सरतोड़ कोशिशों (अर्थात् अत्यन्त ही श्रम) और पवित्र, ज़ोरदार (बलवान्) इच्छा

---

* कायनात.

† एकसू.

‡ खुदबीनी.

का नतीजा है. जो आदमी लगातार बड़प्पन * के और ऊंचे जानेवाले विचारों के सोचने में डूबा रहता है, वह उन तमाम बातों की बाबत जो पवित्र हैं और जिनमें खुदगरज़ी (स्वार्थनिष्ठा) मिली हुई नहीं हैं, सोच विचार करता रहता है, वह निश्चय करके उसी तरह से जिस तरह कि सूरज अपने शिरोबिन्दु पर पहुंचता है और पूर्णमासी का चन्द्रमा अपनी परिपूर्णता को पहुंच जाता है (अर्थात् सोलह ही कला धारण करलेता है). अपने चाल चलन के लिहाज़ से ज्ञानवान् वा तीक्ष्णबुद्धि और भलामानस (शरीफ या महानुभाव) होजायगा और उन्नति की एक प्रभावशाली † वा सामर्थ्यवाली और बर्कतवाली (समृद्धिशाली) दशा को पहुंच जायगा.

हरएक किस्म की सफलता कोशिश (उद्योग) का मुकुट है और ख़यालात का शिरमौर ‡ है. मतलब यह कि हरएक तरह की सफलता कोशिश और ख़याल की मदद से ही हासिल होती है. आत्म-अधिकार +, दृढ़ विचारशक्ति X, पवित्रता, सचाई और विचारों की शुद्धता की सहायता से ही मनुष्य उन्नति को प्राप्त करता है और दुर्वासनाओं, अपवि-

* शरीफ़ाना.

† बाइक़तिदार.

‡ ताज.

न्नता, आलस्य, घूंस खाने और विचारों की विभिन्नता * के सबब से ही इन्सान हेठी दशा को पहुंच जाता है.

एक आदमी जो दुनियां में बड़ीभारी सफलता प्राप्त क-रलेवे और साथ ही उसके आत्मिक महाराज्य में भी किसी ऊंचे दरजे पर पहुंच जाये, वह अगर अपने मनमें अभिमान, घमंड और दिमाग (मस्तिष्क) को परेशान करनेवाले (छितरानेवाले) खयालात का दख़ल होने देगा तो फिर नीचे गिर पड़ेगा.

वे विजय † जो शुद्ध विचारों के ज़रिये से हासिल की जाती हैं सिर्फ़ पूरी पूरी निगहबानी से ही क़ब्जे में रह सकती हैं. बहुतसे आदमी सफलता प्राप्त करके उसकी रोक थाम नहीं करते हैं, इसलिये बहुत जल्दी ही निष्फलता के खड्डे में फिर से गिर पड़ते हैं.

हर तरह की सफलताएं चाहे वे कारोबार से तअ़ल्लुक़ रखनेवाली हों, चाहे बुद्धिसम्बन्धी हों अथवा आत्मिक सृष्टिविषयक हो, बाक़ाइदा (नियमपूर्वक) इन्तिजाम करने-वाले ख़यालात का नतीजा है. वे सब एक ही काइदे (नियम) के आधीन और सब पर एक ही क़ानून (व्यवस्था) से हु-कूमत कीजाती है, अगर कुछ फ़र्क़ (अन्तर वा भेद) है तो सिर्फ़ सफलता के मनोरथ का है.

---

* इन्तिशार.

† फ़ुतूहात.

जो आदमी कोई काम पूरा करना नहीं चाहता उसके लिये किसी कुर्बानी या बलिदान की (अर्थात् किसी दुर्वासना का परित्याग करने अथवा इन्द्रियों के सुख भोग को छोड़ने की) कुछ भी ज़रूरत नहीं है और जो आदमी बड़ी सफलता प्राप्त करना चाहता है उसके लिये बड़ी कुर्बानी (आत्मनिरोध) की ज़रूरत है. इसलिये वह आदमी जो अधिकतर ऊंचे पद पर पहुंचना चाहता है उसके लिये ज़रूरी है कि उसकी कुर्बानी भी अधिकतर ऊंचे दरजे की हो.

कल्पना * और भावना (दृढ़ विचार). (६)

सच तो यों है कि विचारवान् पुरुष ही संसार के मोक्ष-दाता हैं. जिस तरह से कि नजर आनेवाली (दृष्टि में आने-

---

* तसव्वुरात और मेराज—जिस चीज का ख़याल इन्सान के चित्त में आता है, अगर वह हुक्म से खाली हो तो उसे तसव्वुर (कल्पना) कहते हैं और ऊंची से ऊंची. उत्तम, पवित्र, शान्त (निर्विघ्न) और शानदार (प्रतापशाली) जिन्दगी, चाहे वह सांसारिक हो या आत्मिक, बसर करने का वह दृढ़ विचार या नक़्शा जो हरएक आदमी अपनी अपनी समझ के अनुसार अपने चित्त में क़ाइम किया करता है उसका नाम इन्तिहाई मेराज (पूर्णभावना) है और ख़याल के क़ानून के मुवाफ़िक़ अगर उसका विचार पक्का है तो वह हुक्मी तौर पर (निस्सन्देह या अवश्य) एक दिन अपनी भावना को कल्पना के शक्ले सफ़ी स्वरूप में देखेगा।

वाली) दुनियां नज़र न आनेवाली (अदृष्ट) दुनियां के आसरे से क़ाइम है, उसी तरह से इन्सान को अपने तमाम आजमाइशी इम्तिहानों (जांच की जानेवाली परीक्षाओं) तमाम गुनाहों (पापों) और तमाम नीच कामों के दर्मियान इन्हीं एकान्तवासी विचारवान् पुरुषों के पवित्र ख़यालात से शुद्ध और पवित्र गिज़ा पहुंचती रहती है. इन्सानियत या यों कहो कि मनुष्य जातिमात्र अपने विचारवान् पुरुषों को कभी नहीं भूल सकती. वह उनकी भावना को कभी मलियामेट होने और मरने नहीं दे सकती क्योंकि वह उसमे जान डालती है. नस्ल इन्सानी (मनुष्य जाति) उनके ख़याल को हक़ीक़त (सत्यता वा तत्त्व) समझती है, जिसको वह एकदिन अवश्य देखेगी और उसका अनुभव करेगी.

ग्रन्थ रचनेवाले, (साहित्य विद्या के जाननेवाले) पत्थर घड़ने वा मूर्त्ति वगैरह बनानेवाले, चित्रकार (चितारे), शाइर (कवि), औतार या पैगम्बर, ज्ञानी, दुनियां के पीछे की सृष्टि के बनानेवाले और स्वर्ग के कारीगर (राज) है, दुनियां इसी सबब से देखने में सुन्दर दिखाई देती है कि उन्होंने ही इसमें जान डाली है. इनके विना मेहनत करनेवाली नस्ल का ख़ातिमा होजाता. जो आदमी अपने चित्त मे एक खूबसूरत ख़याल बड़े दरजे की भावना का क़ाइम करता है, एक दिन वह उसे ज्यौं का त्यौं सच्चे तौरपर देखेगा. कोलम्बसने मैराजी तौर पर दूसरी दुनियां का खयाल अपने चित्त में जमा लिया था, अख़ीर में उसने उसका पता लगा लिया.

कोपर नीकस का ख़याल दुनियां के लम्बी चौड़ी होने और बहुतसी दुनियां होने के विषय में जगा हुआ था. उस का ख़याल था कि, हमारी दुनियां (पृथ्वी) के सिवाय और भी असंख्य दुनियां *(अर्थात् ग्रहनक्षत्र) हैं, आख़ीर में उसको अपने ख़याल की सजावट असली शक्ल में नज़र आगई.

बौद्ध ने अपने ख़याल, निर्दोष सुन्दरता (बेएब ख़ूबसूरती) और पूर्ण शान्तियुक्त आत्मिक संसार का नक्शा जमाया और वह उसी में दाख़िल हुआ.

अपने ख़यालों को पकाओ, अपनी भावना को पक्की करो वह राग जो तुम्हारे दिल के पर्दे में अलापता है, वह सुन्दरता जो तुम्हारे मन में क़ाइम होती है, वह हरदिल अज़ीज़ (सर्वप्रिय) ख़ूबसूरती जो तुम्हारे सबसे ज़्यादा पवित्र विचारों की पोशाक पहिने हुए होती है, इन सब को क़ाइम रक्खो और पालते रहो क्योंकि इनके भीतर से ही ख़ुशी की सारी हालतें, सारी आसमानी सफलताएं निकलती हैं और अगर तुम सचाई से इन पर क़ाइम रहो तो अन्त में तुम्हारी दुनियां वैसी ही बन जायगी, जैसे कि कहावत मशहूर है कि "अन्त मता सो गता".

किसी चीज़की इच्छा करना ही असल में उसको हासिल करना है और कोशिश करना ही सफलीभूत (कामयाब) होना है. जिस वस्तु की सच्चे दिल से चाहना की जायगी

* पारसी में कुरे (गोले) कहते हैं.

वह ज़ुरूर मिल जायेगी और जिस काम के लिये पूरी कोशिश की जायेगी उसमें निस्सन्देह सफलता प्राप्त होगी, यह मुम्किन * नहीं है कि इन्सान की हैवानी ख्वाहिशें (बुरीवासनाएं) तो भरपेट इनआम पावें और उसकी सबसे ज्यादा पवित्र इच्छाएं भोजन वा ग़िज़ा के विना कड़ाके (फाके) की मौत मरजायें कानून (संसार का नियम) इस प्रकार का नहीं है ऐसी हालत कभी नहीं बरत सकती "मांगो और तुम्हें मिलजायेगा".

ऊंचे दरजे के ख़यालात के ख्वाब (स्वप्न) देखा करो और जैसे स्वप्न देखोगे वैसे ही ज़ुरूर बन जाओगे. तुम्हारा स्वप्न ख़याल इस बात का वादा (प्रतिज्ञा) है कि एक दिन तुम वैसी ही हालत में हो जाओगे. तुम्हारी भावना इस बात की पेशींगोई (भविष्यवाणी) है कि अख़ीर में तुम उससे साक्षात्‌रूप मे मिलोगे.

---

* यह संभव नहीं है कि जिस बड़े भारी कारख़ाने कुदरत में आदमी की नीच से नीच इच्छाओं तक पूरी होने का सामान मौजूद हो उस कारख़ाने में इन्सान के सबसे उत्तम विचारों के पूरा करने की सामग्री मौजूद न हो. याद रक्खो कि आदमी का कोई विचार भी ऐसा नहीं है, जिसके पूरा करने का असली सामान दुनियां में मौजूद न हो. यह बिल्कुल ग़लत है कि लोगों की कई एक ख्वाहिशें सिर्फ़ कल्पनामात्र ही होती है, बल्कि हकीकत यह है कि हरएक ख़याल असलियत रखता है और वह पूरा होकर रहता है.

बड़ी से बड़ी सफलता भी शुरू में थोड़े दिनों के लिये एक स्वप्न या कल्पनामात्र ही हुआ करती है

शाहबलूत का दरख्त (Teak Tree) शुरू में अपने बीज के भीतर ही पनपने के स्वप्न में निमग्न होता है, परिन्द (पक्षी) अंडे के भीतर से ही बाहिर निकलने की राह देखा करता है और आत्मा के सब से ज्यादा ऊंचे अर्थात् उत्तम ख़याल में से एक जीता जागता फ़रिश्ता (ईश्वरदूत) उभर कर बाहिर निकल आता है. ख़याल हक़ीक़त (सत्यता) का बीज और असलियत की पौद है.

तुम्हारे बाहिरी हालात नागवार (असह्य वा सहन न होनेवाले) हो सकते हैं, लेकिन वे ज्यादा अर्सेतक ऐसे नहीं रह सकते, परन्तु जबतक कि तुम अपने लिये भावना अर्थात् अपने मनोरथसिद्धि का ज़रिया क़ाइम न करो और उसतक पहुंचने की कोशिश न करो. तबतक तुम भीतर की तरफ़ सफ़र नहीं कर सकते और बाहिर ही खड़े रहते हो, जैसे एक नौजवान आदमी जो अत्यन्त ही ग़रीबी और मेहनत से लाचार है. एक ऐसे कारखाने में जो उसकी तन्दुरुस्ती के ख़िलाफ़ है घंटों काम करता रहता है और वह कारखाना जो कि हरएक क़िस्म की सभ्यता और शिक्षा की बातों से ख़ाली है, परन्तु वह नौजवान वहां अच्छी अच्छी चीज़ों के स्वप्न देखता है और बुद्धिमानी, सभ्यता, भलाई, डिस्क्रिमिनेशन (ख़ुशनुमाई) और ख़ूबसूरती की बातों को सोचता रहता है. वह अपनी ज़िन्दगी के एक ऊंचे दरजे पर

पहुंचने की हालत का ख़याल अपने चित्त में बांधता है, एक बहुत बड़ी आज़ादी (स्वतन्त्रता) और उच्चतर मनोरथ का ख़याल उस पर क़ब्ज़ा पालेता है. बेचैनी और बेआरामी उसको काम करने के लिये उकसाती है अर्थात् उत्तेजित करती है और वह अपना खाली वक़्त और बची कुची पूंजी, चाहे वह कितनी ही थोड़ी क्यों न हो, अपनी गुप्त ताकतों और धन दौलत को उत्तेजना के बढ़ाने में खर्च करता है, बहुत ही जल्द उसके दमाग़ में ऐसा परिवर्तन* होजाता है कि फिर वह कारख़ाना उसको रख नहीं सकता, वह दमाग़ी तौरसे कारख़ाने के साथ मेल नहीं खाता और हमेशा के लिये उस कारख़ाने को पहिनने के पुराने कपड़ों की तरह से उतार कर अलग रखदेता है और उन मुनासिब मौक़ों पर जो उसकी फलनेवाली ताक़तों ने उसके लिये पैदा कर दिये हैं, जा पहुचता है. थोड़े से बरसों के बाद हम देखते हैं कि यह नौजवान आदमी एक पूरा जवान होगया है, हम उसको खास खास दमाग़ी ताकतों का उस्ताद (गुरु) पाते हैं जिन पर वह आलमगीर असर (सर्वव्यापी प्रभाव) और पूर्ण अद्वितीय† शक्ति के साथ पूरे तौर से हुकूमत करता है. बड़ी बड़ी भारी ज़िम्मेदारियों के कामों की डोर वह अपने हाथों में पकड़ता है. जब वह बोलता है तो देखो जिन्दगियां (जीवन) तब्दील होजाती है क्या औरतें और क्या मर्द सब के सब उसके भाषण पर लट्टू होजाते हैं, अपने

---

* तबदीली

† लासानी—बेनज़ीर.

चाल चलन को सुधार लेते हैं, वह आदमी सूरज की तरह एक प्रकाशमय * केन्द्रस्थान बनजाता है, जिसके गिर्द बहुतसे भाग्य और दीन लोग परिक्रमा करते रहते हैं. इसका कारण यही है कि उस शख़्स ने अपनी जवानी के ख़याल को सच्चा बना लिया है और अपनी भावना के साथ मिलकर एक होगया है.

ऐ नौजवान पढ़नेवालो ! तुम भी अपने ख़याल की हक़ीक़त हाल को मालूम करोगे (दिल की निकम्मी ख़्वाहिश को नहीं). तुम्हारा ख़याल चाहे भला हो या बुरा हो, अथवा दोनों का मज्मुआ (समुदाय) हो, तुम उसकी असली हालत ज़रूर देखोगे, क्योंकि तुम हमेशा उसी चीज़ की तरफ़ खिंचे हुए चले जाओगे, जिसको तुम सब से ज़्यादा प्यारी रखते या समझते हो. तुम्हारे हाथों पर तुम्हारे ही निजके विचारों के ठीक ठीक नतीजे रखदिये जायेंगे और इस तरह जो कुछ तुम कमाओगे वही तुम्हें मिलेगा, न एक तिल भर कम न तिल भर ज़्यादा.

तुम्हारी मौजूदा (वर्त्तमान) हालत चाहे कुछ ही क्यों न हो, परन्तु तुम अपने ख़याल और अपनी कल्पना और अपनी भावना के ज़रिए से ही नीचे गिर पड़ोगे या वर्त्तमान दशा में रहोगे, अथवा ऊंचे उठ जाओगे. ग़रज़ कि जो कुछ खेल है तुम्हारे ख़याल, तुम्हारी कल्पना और तुम्हारी भावना का ही है. तुम अपनी प्रबल इच्छा के अनुसार ही छोटे होजाओगे और अपनी बड़ी ख़्वाहिश के मुताबिक बड़े

स्टान्टन किर्खम डेविस साहिब ने अपने * मनोरंजक शब्दों में क्या अच्छा कहा है:—

मुमकिन है कि तुम हिसाब लिखते लिखते तुरन्त ही उस दर्वाज़े से बाहिर निकल आओ, जो एक अर्से से तुमको अपनी मनोवांछित उन्नति की रोक वा आड़ मालूम होता था, और अपने आपको श्रोतागणों (सुननेवालों) की एक मंडली के आगे इस तरह से पाओ कि, क़लम अभी तक कान में खुंसा हुआ हो और अंगुली पर स्याही के धब्बे मौजूद हों और उसी वक़्त और उसी जगह तुम अपनी आकाशवाणी की तेज़धारा को ज़ोरशोर से वहादो. ऐसा हो सकता है कि तुम गडरियों का राग गाते हुए और खुले मुंह भेड़ें हांकते हुए शहर में भटकते फिरो और अपने आत्मा की मर्दाना रहनुमाई (पथदर्शन) की वदौलत मालिक के तस्वीर खैंचने के कमरे में चले जाओ और थोड़ी देर पीछे मालिक तुमसे कहे कि "अव मेरे पास तुम्हारे सिखाने के लिये कोई बात नहीं है" और अव तुम आपही मालिक होगये हो, क्योंकि वह तुमही तो थे जिसने भेड़ें चराते चराते अभी हाल में बड़े भारी कामों का ख़याल किया था. अव तुम अपना खुर्पा और जाली †

* खूवसूरत.

† खुर्पा और जाली की जगह ग्रन्थकर्त्ता ने Saw और Plane शब्द लिखे हैं, जिनका अर्थ आरी और रन्दा होता है, लेकिन मेरी राय में चर्वाहे (चरानेवाले) के लिये खुर्पा और जाली ठीक जचते हैं.

हाथ में से फेंक दो और दुनियां की शारीरिक उन्नति को छोड़कर आत्मिक उन्नति इख्तियार करो, जो लोग बेसमझ हैं या बेखबर (अचेत) और अज्ञान हैं वे असली चीज़ों को नहीं देखते, बल्कि चीज़ों के सिर्फ बाहिरी नतीजों को देखा करते हैं और इसको भाग्य, तक्दीर और संजोग के नाम से पुकारा करते हैं जब वे एक आदमी को धनवान होते देखते हैं तो कहा करते हैं कि " अहा ! वह कैसा खुशकिस्मत (भाग्यशाली) है ! " जब दूसरे को ज्ञानवान् या बुद्धिमान् होता हुआ देखते हैं तो फौरन पुकार उठते हैं कि " देखो ! उस पर ईश्वर की कैसी कृपा है ! " तीसरे में सन्तों का सा चलन और उसका विस्तृत प्रभाव (बड़ा भारी असर) देखकर कहा करते हैं कि " वाह वाह ! सजोग (इत्तिफाक़) हर दफे उसकी कैसी मदद करता है ! " ये लोग उन आज़मायशों (जांचों), निष्फलताओं और कठिनाई की बातों को जो उन लोगों को अपना अनुभव प्राप्त करने के लिये बहादुरी से सहनी पड़ी थीं, नहीं देखते, न लोगों को इस बात का ज्ञान है कि उन्हें अपने मनकी भावना को असली शक्ल में ज़ाहिर करने के लिये और उस वस्तु पर सफलता (विजय) प्राप्त करने के लिये, जो ज़ाहिर में अजीत सी मालूम होती है, कितनी बहादुराना कोशिशें करनी पड़ी थीं, कितनी कुर्बानियाँ की कुर्बान पड़ी थीं और कितना भरोसा और ईमान

लाना पड़ा था. लोग उनकी मुसीबतों और दिली सदमों (तकलीफों) से बेखबर होते हैं, वे सिर्फ़ उनके तेज और खुशी को देखते हैं और उसे कहते हैं कि "क़िस्मत (भाग्य) देखनेवाले ये नहीं देखते कि उन लोगों को अपनी लम्बी और दुर्गम * यात्रा में किन किन तकलीफ़ों और मुसीबतों का सामना करना पड़ा था, बस वे तो सिर्फ अच्छे दिखाई देनेवाले नतीजे को देखते हैं और कहते हैं कि " खुशक़िस्मती (सौभाग्य) ".

ज़ाहिरी वातों को देखनेवाले लोग अमल (क्रिया) को तो आदि से अन्ततक देखते नहीं, सिर्फ नतीजे पर ख़याल करते है और कहा करते हैं कि, इसका नाम है "संजोग (इत्तिफ़ाक़)" मनुष्य के सारे कारोवार में, जहां कोशिश होती है वहां नतीजा भी होता है. कोशिश की ताकत (उद्योग-शक्ति) के ही आधीन नतीजा है, अर्थात् जितनी कोशिश की जायेगी उसी अन्दाज पर नतीजा निकलेगा. संजोग कोई चीज़ नहीं है. ईश्वरीय प्रदान, सब प्रकार के बल व ताक़तें, धन दौलतसम्बन्धी, वुद्धिसम्बन्धी और आत्माविषयक क़ब्ज़े अर्थात् भोग उद्योग के फल है, अर्थात् वे विचार है जो सिद्ध होगये हैं, वे मनोरथ है जो पूरे होगये हैं, वे ख़याल हैं जिनको साक्षात्रूप में प्रकट कर लिया गया है. वह खयाल जो तुम अपने चित मे जमाओगे. वह भावना जो तुम अपने मन में काइम करोगे वैसी ही तुम अपनी जिन्दगी (जीवन) वनालोगे और वैसे ही तुम आप हो जाओगे.

---

* दुशवार गुज़ार सफ़र.

शान्ति. (७)

मनकी शान्ति ही ज्ञान का सुन्दर रत्न है. यह अपने मन को बहुत समय तक दृढ़ता के साथ वश में रखने का नतीजा है किसी आदमी में शान्ति का मौजूद होना इस बात की निशानी है कि उसका अनुभव पक्का है और उस शख्स को ख्याल के क़ानून के इल्म और अमल की वाक़िफ़यत मामूली (साधारण) वाक़िफ़यत से ज़्यादा है.

जितना ज़्यादा कोई आदमी इस बात की बहुत बड़ी ज़रूरत (अत्यावश्यकता) को समझता है कि वह आपही ख्याल की पैदा की हुई सृष्टि है, उतना ही वह शान्तचित्त होता है और इस बात की वाक़िफ़यत उसको ऐसा समझने के लिये मजबूर करती है कि, दूसरे लोग भी ख्यालका ही नतीजा हैं, अर्थात् ख्यालसे ही उत्पन्न हुए हैं और ज्यों ज्यों उस आदमी की सच्ची समझ बढ़ती जाती है और ज़्यादा ज़्यादा सफाई के साथ वह चीज़ों के भीतरी सम्बन्धों को कारण और कार्य के ज़रिए से देखता जाता है वह उत्पात * करना बन्द करदेता है और बेचैनी और चिन्ता करने से रुकजाता है, वह दृढ़ प्रकृति + गंभीर और शान्तचित्त होजाता है.

शान्त स्वभाव का आदमी इस बात को जानकर कि अपने आप पर क्योंकर हुकूमत कीजाती है, यह भी जानता है

---

* उर्दू में शोरोशर है.

कि वह अपनी ख़िद्मतों (सेवा) से दूसरों को क्योंकर फ़ायदा पहुंचा सकता है. लोग उसकी ख़िद्मतों के एवज़ उसकी आत्मिकशक्ति की इज्जत करते हैं, इस बात की उनको ज़रूरत मालूम होती है कि उससे कुछ सीखें और उस पर भरोसा करें. मनुष्य जितना ज्यादा शान्तचित्त होता जाता है, उतना ही वह ज्यादा सफलीभूत * और प्रभावशाली + होता जाता है और उसकी नेकी की ताक़त बढ़जाती है. मामूली व्योपारी भी जिस वक्त अपने आपको वशमें रखने और दृढ़चित्त रहने की शक्ति को बढ़ालेगा, वह अपने कारोबार में तरक्की (उन्नत्ति वा वृद्धि) देखेगा, क्योंकि लोग ऐसे ही आदमी से अधिकतर व्यवहार करना पसन्द करेंगे, जिसका कि चालचलन सीधा और मज़बूत है.

दृढ और शान्तचित्त आदमी की सब लोग इज़्ज़त करते हैं और उसको हरएक आदमी प्यारा (प्रिय) रखता है. वह बहुतही सूखी (निर्जल) भूमि पर एक छायादार वृक्ष के तुल्य है या तूफान (आंधी मेह) से बचने के लिये एक चटान है. ऐसा कौन शख्स़ है, जो शान्तचित्त, नर्म मिज़ाज और कांटे के तोल जीवन व्यतीत करनेवाले से प्रेम न करता हो ? वे लोग जो इन बरकतों पर अधिकार रखते है, वे इस बात की बिलकुल पर्वा नहीं करते कि मेह बरस रहा है, या धूप पड़रही है, अथवा क्या क्या तब्दीलियां (परिवर्तन) होरही है, क्योंकि वे सदा प्रेम, शान्ति और आनन्द की हालत में

---

* कामयाब

+ बाअसर.

रहते हैं. मनुष्य के स्वभाव का कांटे के तौल अर्थात् एक सम रहना, जिसको हम शान्ति कहते हैं, शिक्षा का आखरी सबक (अन्तिम पाठ) है.

यही वह बात है जिसको जिन्दगी का फलना और आत्मा का फलना कहते हैं. यह ज्ञान के बराबर क़ीमती चीज़ है और सोने (सुवर्ण) से क्या बल्कि कुन्दन से भी ज्यादा इस की चाहना कीजाती है. सिर्फ़ रुपया कमाने की खुशहिली ... रना शान्ति की ज़िन्दगी के मुक़ाबले में कैसा तुच्छ मालूम होता है ? शान्ति की जिन्दगी वह जिन्दगी है, जो सच्चाई के समुद्र की लहरों के तले इतनी गहरी रहती है जहां तूफान की बिलकुल पहुंच नहीं हो सकती. और यही स्थान अनादि और अनन्त परम आनन्द की जगह है. हम ऐसे बहुतसे लोगों को जानते हैं, जिन्होंने अपनी जिन्दगी कडुवी कर डाली है और अपने मिठास और अपने स्वभाव की उत्तमता को बर्बाद कर दिया है जो अपने चालचलन की समता को खो बैठे हैं और जिन्होंने दुनियां भर को अपना वैरी बना लिया है

यहां एक सवाल (प्रश्न) पैदा होता है कि क्या मनुष्यों की बहुत बड़ी तादाद (संख्या) अपने मन को वश में न रखने के सबब से अपनी ज़िन्दगियां बर्बाद नहीं कर देती और अपनी खुशी का खून नहीं कर डालती अर्थात् अपने आनन्द को नष्ट नहीं कर देती अपनी जिन्दगी में हमको ऐसे थोड़े ही आदमी मिलते हैं, जो कांटे की तौल जिन्दगी बसर करते हों और जिनका चालचलन ऐसा तुला हुआ यानेएकसा हो जो एक निर्मल प्रकृति का स्वाभाविक गुण है

इसमें शक नहीं कि यह इन्सान में एक स्वाभाविक बात है कि वह ऐसे जोश के सवब से जिस पर कब्ज़ा हासिल न किया गया हो, अर्थात् जिस जोश को अपने क़ाबू या वश में न कर लिया गया हो अपने आपे से बाहिर हो जाता है. और ऐसे रंज के सवब से जिसको क़ाबू में न किया गया हो क्रोधातुर होजाता है और जबतक उस का सन्देह और संशय न मिटाया जावे, वह बेचैनी की हालत में बड़बड़ाता रहता है, लेकिन् सिर्फ़ बुद्धिमान् आदमी और सिर्फ़ वह शख्स जिसने अपने विचारों पर अधिकार प्राप्त कर लिया है और उन्हें शुद्ध कर लिया है, जीवात्मा की आंधियों और तूफानों को अपना आज्ञाधीन बना सकता है और अपना सिक्का जमा सकता है.

हे अशान्तप्राणियो ! चाहे तुम कहीं भी क्यों न हो और चाहे कैसी ही हालतों में तुम अपनी ज़िन्दगी न बिताते हो, इस बात को जानलो कि ज़िन्दगी के अपार समुद्र में सौभाग्य और ईश्वरीय अनुग्रह के टापू खड़े हुए मुसकरा रहे हैं और तुम्हारी भावनासिद्धि का चमकदार किनारा तुम्हारे आगमन की राह देखरहा है. अपने विचार की नावके पतवार को मज़बूती से अपने हाथ में थामलो. तुम्हारे जीवात्मा के तीन मस्तूल वाले जहाज मे जहाज़ों का सबसे वड़ा कप्तान आराम कर रहा है, वह सिर्फ़ नींद में है उसे जगा दो. आत्मअधिकार शक्ति है, सच्चा ख़याल हुकूमत है, शान्ति शक्ति है, अपने मनसे कहो कि शान्त हो ! शान्त हो ! ! शान्त हो ! ! !

ओं शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥